मुहर्रम पर्व के ऐतिहासिक एवं रीति-रिवाजों के विस्तार पर एक अध्ययन: अनारपुर गाँव के विशेष संदर्भ में |

Dr. Rakesh Kumar,
Postdoctoral Researcher
Singapore Institute of Technology, Singapore,

सारांश:

इराक देश में मैदान-ए-कर्बला नामक एक बहुत बड़ा रेगिस्तान था ; उसी मैदान में युद्ध हुआ था, इसलिए कर्बला का युद्ध कहा जाता है | उसी मैदान के सटे एक नदी है, उस नदी का नाम फरात नदी है | वर्तमान समय में कर्बला मैदान में एक शहर बस गया है | कर्बला का युद्ध जो 680 ईस्वी में हुआ था; वो एक राजनितिक शासक के चलते हुआ था |

शासक अमीर मुआविया की मृत्यु के बाद, उनका बेटा यज़ीद 680 ईस्वी में चुनाव या लोकप्रियता के बजाय वंसागत तरीके से उनका उत्तराधिकारी बनना युद्ध का मुख्य कारण बन गया था।

मूहर्रम कोई त्यौहार नहीं है बल्कि इस्लामिक साल का पहला महीना है | यज़ीद के फ़ौज के द्वारा इमाम हुसैन को 02 मुहर्रम को कर्बला लाया गया था; 07 मुहर्रम 61 हिजरी से हुसैन के खेमें के लिए पानी बंद कर दिया था | और 10 मुहर्रम, 61 हिजरी को सुबह से कर्बला का युद्ध हुआ था |

इसी युद्ध में यज़ीद के द्वारा, इमाम हुसैन के साथ-साथ उनके लगभग साथी और परिवार को शहीद कर दिया गया था | इसलिए इस शहादत को याद रखने के लिए उनका शहादत (शोक) के तौर पर, उसी माह में पर्व के रूप में मनाया जाने लगा था |

तैमुर लंग बादशाह ने ही ताज़िया की सुरुआत की थी लगभग 801 हिजरी में | हजरत अली का पुत्र इमाम हुसैन जो कर्बला में शहीद हुए थे, उन्ही के याद (शोक) में मुहर्रम मनाया जाता है |

अनारपुर गाँव के मुहर्रम पर; पूरें 10 दिन का क्रियाकलाप का भी वर्णन किया गया है, और उसमे कुछ सुधार हेतु प्रस्ताव भी दिया गया है | जो की अनजाने या पहले से चले आ रहे रीति-रिवाजों के अनुसार मनाया जा रहा था |

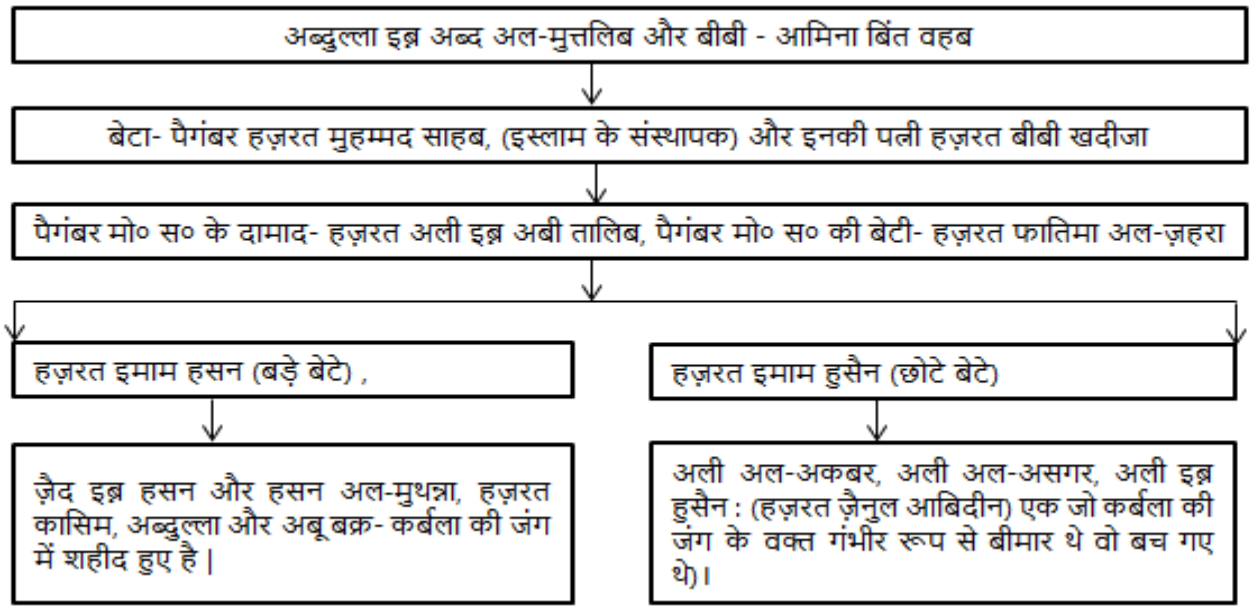
रिसर्च डेटा दोनों प्रकार की विधियों से एकत्रित किया गया है—प्राथमिक एवं द्वितीयक। प्राथमिक डेटा प्रत्यक्ष स्रोतों से तथा द्वितीयक डेटा पुस्तकों, शोध-पत्रों और अन्य उपलब्ध स्रोतों से प्राप्त किया गया है।

यह घटना केवल इस्लामिक इतिहास तक सिमित नहीं है, बल्कि मानवता, सत्य, न्याय और नैतिक साहस का सार्व भौमिक प्रतीक बन चुकी है | प्रस्तुत शोध-पत्र में मुहर्रम के ऐतिहासिक, धार्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक पक्षों का विश्लेष्णात्मक अध्ययन किया गया है |

कुंजी शब्द: मुहर्रम, कर्बला, इमाम हुसैन, आशूरा, इस्लामी इतिहास, भारतीय संस्कृति, मानवता, अनारपुर, ताज़िया ।

01. परिचय (प्रस्तावना):-

इमाम हुसैन: मदीना (वर्तमान सऊदी अरब) का रहने वाला हजरत अली और उनकी पत्नी (बीवी) फातिमा का दो महान पुत्र था, पहला इमाम हसन और दूसरा इमाम हुसैन | यह मदीना-अरब में पैदा हुए महापुरुषों में से एक था | हुसैन का जन्म मदीना-अरब (वर्तमान सऊदी अरब) में 626 ईस्वी में हुआ था | कर्बला का युद्ध जो 680 ईस्वी में हुआ था; उस समय उनका शहादत लगभग 54 साल की उम्र में हुई थी | हुसैन का वाणी था की : हम झूठ नहीं बोलेगे, झूठे के आगे नहीं झुकेगे, पीठ पीछे शिकायत नहीं करेगें और नहीं करने देगें, किसी को शोषण नहीं करने देगे, किसी के मज़बूरी का फायदा नहीं उठाने देगें | और अपने हाथ और मुँह से नुकसान किसी को नहीं पहूँचाते हुए एक अच्छा साम्राज्य बनायेगे | इसलिए कूफा के लोग चाहते थे की शासक अमीर मुआविया के मौत के बाद ; इमाम हुसैन को खलीफा बनाना चाहता था [1] |



तालिका 01- इमाम हुसैन के परिवारिक को दर्शाता है |

क्र०	इमाम हुसैन	इमाम हुसैन की बीबी	
1	इमाम हज़रत हुसैन	उम्म रुबाब (रबाब)	ये इमरु अल-क़ैस की पुत्री थीं और इनसे हजरत सकीना व अब्दुल्ला (अली असगर) का जन्म हुआ था
2		शहरबानू	इन्हें गजाले या शाहिनान भी कहा जाता है, जो ईरान के अंतिम ससानी सम्राट याजदगिर्द तृतीय की पुत्री थीं। इनसे इमाम जैनुल आबिदीन (अद-सज्जाद) का जन्म हुआ।
3		लैला बिंत अबी मुर्रा	ये उरवा बिन मसूद अल-थक़फ़ी की पुत्री थीं और इनसे हजरत अली अकबर का जन्म हुआ।
4		उम्म इस्हाक़ बिंत तल्हा	ये तल्हा बिन उबैदुल्लाह की पुत्री थीं और इनसे फातिमा अल-कुबरा का जन्म हुआ।

तालिका 02- इमाम हज़रत हुसैन के बीबी और उनके बच्चे को दर्शाता है |

किस शासक ने अपने कार्य-काल में कहाँ और कितना राजधानी बनाया था | जिसका विवरण निम्न प्रकार निचे दिया गया है |

क्र०	खलीफा	खिलाफत का काल	राजधानी
1	हजरत अबू बक्र (रज़ि.)	632 – 634 ईस्वी	मदीना (सऊदी अरब)
2	हजरत उमर (रज़ि.)	634 – 644 ईस्वी	मदीना (सऊदी अरब)
3	हजरत उस्मान (रज़ि.	644 – 656 ईस्वी	मदीना (सऊदी अरब)
4	हजरत अली (अले.)	656 – 661 ईस्वी	कूफ़ा (इराक) - इन्होंने 657 ईस्वी में मदीना से राजधानी बदलकर कूफ़ा किया गया था
5	5. हजरत हसन (अले.)	661 ईस्वी (कुछ महीने	कूफ़ा (इराक)
6	अमीर मुआविया (उमय्यद वंश)	661 – 680 ईस्वी	दमिश्क (सीरिया) - इन्होंने उमय्यद खिलाफत की स्थापना की और राजधानी सीरिया स्थानांतरित कर दिया था।
7	यज़ीद प्रथम (उमय्यद वंश)	680 – 683 ईस्वी	दमिश्क (सीरिया)

तालिका 03- शासक की राजधानी को दर्शाता है |

इमाम हसन: हसन का पूरा नाम हसन इब्न अली था | इमाम हसन उस समय के बहुत बड़े विद्वान थे | मुस्लमान उन्हें इस्लामी पैगंबर के नाम से पुकारते थे | हसन दुसरे इमाम के रूप में पूजनीय थे | हसन का जन्म 624 ई० मदीना-अरब (वर्तमान सहुदी अरब) में हुआ था | और उनकी शहादत 670 ई में हुआ था | हसन का शहादत लगभग 36 साल की उम्र में हुई थी | इतिहासकार ऐसा बताते है की हसन की बीबी जाअदा बिंद अल-अशअत ने पानी और खाने में जहर मिला कर खिला दिया था; जिससे हसन की शहादत हो गया था | कुछ इतिहारकारो इस घटना को राजनितिक साज़िश भी कहते है | मुहर्रम में ये भी रस्म (क्रियाकलाप) शामिल थी; दशमी के सुबह में इमामबाडा पर ताज़िया रखने के समय जहर का प्याला पीने का भी रस्म था |

इमाम हसन ने अपने पिता हज़रत अली की तरह ही कूफा को अपनी राजधानी बनाया और प्रशासनिक नियत्रण अपने पास रखा उनके कार्यकाल में कूफा और इराक का प्रशासन सीधे उनके नियत्रण में था, जहाँ उन्होंने स्थानीय हकीमों और गवर्नर की नियुक्ति कि थी, हालाँकि कुटनीतिक और युद्ध की स्थिति के दौरान वहाँ अंदरूनी उठापटक भी शुरू हो गई थी |

राजा (शासक) मुआविया: इनका पूरा नाम हजरत अमीर मुआविया है, और इनका जन्म 602 ई० में मक्का में एक शक्तिशाली कुलीन परिवार में हुआ था | उनके पिता का नाम 'अबू सुफियान' और माता का नाम 'हिंद बिन्त उत्बा' था | इस्लाम के इतिहास में एक बेहद महत्पूर्ण और प्रभावसाली व्यक्ति थे | सुरुआत में इनके परिवार ने पैगंबर मोहमद का विरोध किया था, लेकिन 630 ईस्वी (मक्का फतह) के दौरान अबू सुफियान और उनके पुरे परिवार ने आधिकारिक रूप से इस्लाम अपना लिया था | इनकी (मृत्यु) निधन 680 ईस्वी में,स्थान दमिश्क राजधानी में हुआ था | उस समय दमिश्क इराक का राजधानी था |

अमीर मुआविया के शासक बनने से पहले निम्न प्रकार पद पर रहे थे :

क्र०	शासन काल में	नाम	पद	जगह	अभियुक्ति
1	हजरत उमर इब्र अल खाताब	हजरत अमीर मुआविया	गवर्नर	सीरिया	
2	हजरत उस्मान बिन अफ्फान	हजरत अमीर मुआविया	गवर्नर	सीरिया	कुरैश जनजाति के धनी उमय्यद कबीले (बनू उमय्या) से ताल्लुक रखते थे	
3	हजरत अली इब्रे अबू तालिब	हजरत अमीर मुआविया	गवर्नर	सीरिया	इनके शासन कल में, हजरत अमीर मुआविया ने इनके साथ ही युद्ध किया था	

तालिका 04- अमीर मुआविया शासक बनने से पहले के पद को दर्शाता है |

हजरत अली और अमीर मुआविया के बीच वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो गया था, क्योंकि मुआविया, हज़रत उस्मान के हत्यारों को तुरंत (न्याय) सजा देने की मांग कर रहे थे | इसके परिणामस्वरूप दोनों के बीच सिफ्फिन का युद्ध हुआ था | हजरत अली की शहादत के बाद उनके पुत्र हजरत हसन ने मुस्लिम समुदाय में शांति और एकजुटता बनाए रखने के लिए अमीर मुआविया के साथ समझौता किया और खिलाफत उनके सुपुर्द कर दिया था | इस तरह 661 ईस्वी में अमीर मुआविया पुरे मुस्लिम साम्राज्य के खलीफा बने , तो उनके राजपाल निम्न प्रकार है :

क्र०	शासन काल में	नाम	पद	जगह	अभियुक्ति
1	हजरत अमीर मुआविया	अल-मुगीरा इब्न शुबा	गवर्नर	कूफ़ा	इन्हें शुरुआत में **कूफा** का राज्यपाल बनाया गया था।
2		अब्दुल्ला इब्न आमिर	गवर्नर	बसरा	इन्हें शुरुआती दौर में **बसरा** और उसके अधीन आने वाले पूर्वी क्षेत्रों
3		ज़ियाद इब्न अबीही	गवर्नर	फारस	
4		अम्रु बिन अल-आस	गवर्नर	मिस्र	
5		मरवान इब्न अल-हकम	गवर्नर	मदीना	
6		उकबा इब्न नाफी	गवर्नर	उत्तरी अफ्रीका	
7		हजरत अमीर मुआविया	गवर्नर	सीरिया (दमिश्क)	

तालिका 05 – हजरत अमीर मुआविया के गवर्नर को दर्शाता है |

यज़ीद: यज़ीद का पूरा नाम यज़ीद इब्रे मुआविया था | ये हज़रत अमीर मुआविया के पुत्र थे | इनका जन्म 645 या 646 ईस्वी में हुआ था | इस्लामी इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ था की जब सत्ता योग्यता (चुनाव/ एकमत, सर्व सम्मति) की बजाय वंसवाद या परंपरा (पिता के बाद बेटा) के आधार पर शासक बना था | इसलिए इमाम हुसैन इनका शासक मानने से इंकार कर दिया था | कुछ समय बाद के ऐतिहासिक स्रोतों में शराब, संगीत और अन्य अनैतिक व्यवहार के आरोप मिलते हैं, लेकिन इन विवरणों की ऐतिहासिक विश्वसनीयता पर विद्वानों में मतभेद है [24]।

यज़ीद मुआविया के माता का नाम (मेसून) मईसून बिन्त बह्दल था | मेसून बिन्त बह्दल बनू कल्ब कबीला पारंपरिक रूप से ईसाई धर्म को मानता था | हज़रत अमीर मुआविया ने सीरिया के इस प्रभावशाली ईसाई कबीले के साथ राजनितिक और सामाजिक संबंध मजबूत करने के लिए मैसून से विवाह किया था लगभग 650 ईस्वी में | शादी के बाद उनके बेटे यज़ीद प्रथम का जन्म हुआ था | यज़ीद के जन्म के बाद, जब वह छोटे बच्चे ही थे, तभी मुआविया ने मईसून को तलाक दे दिया था |

इनका शासनकाल 680 से 683 ईस्वी तक रहा | यह गंभीर बीमारी से ग्रषित हो गया था | यज़ीद ने लगभग 3 साल से कुछ अधिक समय तक शासन किया और 683 ईस्वी में लगभग 38 वर्ष की उम्र में उसकी मृत्यु हो गई थी | जैसा कर्म किया वैसा फल मिला | लगभग 3 साल और 8 महीने तक खलीफा (शासक) रहा था |

क्र०	शासन काल में	नाम	पद	जगह	अभियुक्ति
1	यज़ीद इब्रे मुआविया	वलीद बिन उत्बा	गवर्नर	मदीना	सुरुअती में
2		नुमान बिन बसीर	गवर्नर	कूफ़ा	सुरुअती में
3		उबैदुल्लाह इब्न ज़ियाद	गवर्नर	बसोंरा बसरा	सुरुअती में
4		अम्र बिन सईद बिन अस	गवर्नर	मक्का	सुरुअती में
5		यज़ीद इब्रे मुआविया	केंद्र	शाम (सीरिया)	

तालिका 06– यज़ीद के गवर्नर को दर्शाता है |

<u>हजरत अली:</u> इनका पूरा नाम, अली इब्र अबी तालिब, इस्लाम के पैगंबर मुहम्मद के चचेरे भाई और दामाद भी थे | उनका जन्म मक्का में पवित्र शहर काबा के अन्दर हुआ था | शिया मुसलमानों के अनुसार वे पहले और सुन्नी मुसलमानों के अनुसार चौथे खलीफा थे | इनके पिता अबू तालिब और माता फातिमा बिन्त असद थी | बचपन में माता-पिता की स्थिति देखते हुए वे पैगंबर मुहम्मद के घर में रहे और उनकी देख रेख में पले बढे | लगभग 11 साल के उम्र में उन्होंने सबसे पहले इस्लाम धर्म अपनाया | उन्होंने 656 से 661 ईस्वी तक पांच साल तक खलीफा के रूप में शासन किया | वे अपने शासनकाल में अत्यंत साधारण जीवन जीते थे | खुद अपने हाथ से काम करते थे और गरीबों एवं अनार्थो की मदद करते थे | 28 जनवरी 661 ईस्वी (19 रमजान 40 हिजरी) को कूफा की मस्जिद में नमाज़ के दौरान एक विद्रोही इब्र मुलजिम ने जहर से बुझी तलवार से उन पर वार किया | 21 रमजान को उनका इंतकाल हुआ और उन्हें इराक के नजफ शहर में दफनाया गया | इनका कार्य काल 656 ईस्वी से 661 ईस्वी तक रहा इसका राजधानी पहले मदीना में था फिर कूफा इराक में बनाया था | इनका क्षेत्राधिकार –अरब, इराक, मिश्र, लैवेंट का बड़ा हिस्सा था (आज मिडिल ईस्ट का देश है)| हज़रत अली का राजपाल इस प्रकार है :

सुन्नी मुसलमानों के अनुसार: हज़रत अबू बकर पहले, हज़रत उमर दूसरे, हज़रत उस्मान तीसरे और हज़रत अली चौथे खलीफा थे। सुन्नी समुदाय मानता है कि पैगंबर मोहम्मद के बाद ये चारों खलीफा सही और वैध (राशिदुन) तरीके से चुने गए थे |

शिया मुसलमानों के अनुसार: हज़रत अली को पैगंबर मोहम्मद के बाद पहले वैध उत्तराधिकारी (इमाम/खलीफा) होने चाहिए थे। शिया मान्यता है कि पैगंबर ने हज़रत अली को अपना उत्तराधिकारी नामित किया था, इसलिए वे पहले तीन खलीफाओं (अबू बकर, उमर, उस्मान) के चयन को सही नहीं मानते और हज़रत अली को ही अपना पहला इमाम मानते हैं |

व्यावहारिक और ऐतिहासिक रूप से (यानी क्रम में गद्दी संभालने के लिहाज से) हज़रत अली चौथे नंबर पर ही आए थे, लेकिन धार्मिक सिद्धांत में शिया उन्हें पहला और सुन्नी उन्हें चौथा मानते हैं |

हज़रत अली का गवर्नर इस प्रकार है |

क्र०	शासन काल में	नाम	पद	जगह	अभियुक्ति
1	अली इब्र अबी तालिब	मुहम्मद बिन अबू बक्र		मिश्र	इनके पहले कैस बिन साद बिन उबदाह
2		अब्दुल्लाह बिन अब्बास		बसत	ऊंट के लड़ाई के बाद नियुक्त ; इससे पहले उस्मान बिन अबू हुजैफा था
3		अबू मूसा अशअरी		कूफा	सुरुआत में , बाद में इन्हें हटा दिया गया था	
4		अबू अय्यूब अंसारी		मदीना	मदीना शहर में इसी का कबीले बसा था	
5		मुआविया बिन अबू सुफियान		सीरिया	इन्होने हज़रत अली का बात मानने या पद छोड़ने से इंकार कर दिया था	इसी के साथ युद्ध हुआ	
6		कैस बिन साद बिन उबदाह		अजरबैजान	
7		मिखनाफ़ अल अश्तर		इस्फहान	
8		मालिक अल-अश्तर		नसीबीन	
9		खर्रित बिन राशिद		अहवाज	
10		कुमैल बिन जियाद		हेत	

तालिका 07– हजरत अली इब्न अबी तालिब के गवर्नर को दर्शाता है |

पैगंबर हजरत मुहम्मद: हजरत मुहम्मद साहब का जन्म 570 ईस्वी में मक्का (सऊदी अरब) में हुआ था। इस्लामिक मान्यताओं के अनुसार, 40 वर्ष की आयु में उन्हें अल्लाह की तरफ से फरिश्ता हज़रत जिब्राईल के जरिए दिव्य संदेश मिलने शुरू हुए। उन्होंने अरब समाज में फैली कुप्रथाओं और मूर्तिपूजा को समाप्त कर एकेश्वरवाद (अल्लाह एक है) का संदेश दिया। पैगंबर का पद ईश्वर द्वारा प्रदत्त होता है, जबकि खलीफा का पद पैगंबर के बाद मुस्लिम उम्माह (समुदाय) के राजनीतिक व धार्मिक नेतृत्व के लिए चुना जाता है | 632 ईस्वी में मुहम्मद साहब के वफात के बाद मुसलमानों के राजनीतिक नेता के रूप में सबसे पहले हजरत अबू बकर सिद्दीक को खलीफा बनाया गया, जिसके बाद हजरत उमर, हजरत उस्मान और हजरत अली इस पद पर रहे |

मुस्लिम बिन अकील: इनका पूरा नाम मुस्लिम इब्न अकील बिन अबू तालिब। ये इमाम हुसैन के चचेरा भाई थे (इमाम अली के भाई के पुत्र थे) | इनका पिता अकील इब्न अबू तालिब और माता उलया था। वे अपने साहस, बुद्धिमत्ता, सत्यनिष्ठा और महान योद्धा के रूप में जाने जाते थे। हज़रत मुस्लिम बिन अकील का जन्म लगभग 12 हिजरी (632 ईस्वी) में मदीना मुनव्वरा (वर्तमान सऊदी अरब) में हुआ था | इस्लामी इतिहास और रिवायतों के अनुसार उनका जन्म 12 हिजरी माना जाता है और 60 हिजरी में उनकी शहादत के समय उनकी उम्र लगभग 48 वर्ष थी | हज़रत मुस्लिम बिन अकील की शहादत 9 ज़िलहिज्जा 60 हिजरी (इस्लामी कैलेंडर के अनुसार) को हुई थी, जो अंग्रेजी कैलेंडर के मुताबिक 10 सितंबर 680 ईस्वी का दिन था। उनकी मृत्यु कूफ़ा, इराक में हुई थी | ये कर्बला के लड़ाई से ठीक पहले, इमाम हुसैन के कहने पर कूफा गए थे | क्योंकि कूफा के लोग इमाम हुसैन को ख़त भेजना बंद नहीं किया था | तब इमाम हुसैन ने बोला की कूफा जाकर देखो की हो क्या रहा है | ज़िलहिज्जा के महीने में 9 तारीख को उनकी शहादत हुई थी। यदि यह महीना 29 दिन का था, तो शहादत के बाद इस महीने में 20 दिन बचे। यदि महीना 30 दिन का था, तो 21 दिन बचे; इमाम हुसैन को कर्बला आने से 23 दिन पहले शहीद हो चूके थे |

ज़िलहिज्जा माह अगर 29 का था तो = 10 से 29 = 20 (20+ 1 दिन चाँद + 1मुहर्रम = 22 दिन)
ज़िलहिज्जा माह अगर 30 का था तो = 10 से 30 = 21 (21+ 1 दिन चाँद + 1मुहर्रम = 23 दिन)

इमाम हुसैन 2 मुहर्रम को कर्बला पहुँचे थे | इमाम हुसैन को कर्बला पहुँचने से 22 या 23 दिन पहले इनका शहादत हो गया था | ये बनी हाशिम परिवार से थे; और अकील बिन अबू तालिब के पुत्र थे |

शिया–सुन्नी: हसन और मुआविया संधि 661 ईस्वी इस्लामिक इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है, जिसने पहले मुस्लिम गृह युद्ध को समाप्त किया था | इस संधि को लेकर सुन्नी और शिया दृष्टिकोणों में स्पष्ट अंतर पाया जाता है | यज़ीद के गवर्नर, उबैदुल्लाह इब्न जियाद, के डर से जो हुसैन का साथ छोड़ा था, वो शिया लोग ही थे |

हजरत हसन इब्न अली और मुआविया इब्न अबी सुफयान के बीच निम्नलिखित मुख्य शर्तो पर सहमति बनी थी:
(1) सता का हस्तांतरण: हसन इस सर्त पर खिलाफत की जिम्मेदारी मुआविया को सौपेगे कि वह कुरान और सुन्नत के अनुसार शासन करेगे |
(2) उतराधिकारी: मुआविया अपने बाद किसी को खलीफा नामित नहीं करेंगे | उनके बाद सता लोकतात्रिक तरीके से (शूरा या परामर्श द्वारा) तय होगी |
(3) सुरक्षा की गारंटी: अहले – बैत (पैगंबर के परिवार), अली के समर्थक और सभी नागरिकों को पूर्ण सुरक्षा दी जाएगी | उन्हें किसी पुराने विवाद के लिए प्रताड़ित नहीं किया जाएगा |
(4) वितीय प्रावधान: फूफा के बैतूल – माल (राजकोष) की एक निच्शित राशि और दराबजर्द (फारस) का कर हसन और हुसैन को दिया जाएगा ताकि वे कर्ज चूका सके और जरुरतमंदो की मदद कर सके |
(5) हजरत अली पर सार्वजनिक रूप से की जाने वाली बयानबाजी या बुराई को पूरी तरह रोका जाएगा |

सुन्नी विद्वान इस संधि को हजरत हसन का एक महान् और दूरदर्शी फैसला मानते थे | उन्होंने उम्माह (मुस्लिम समुदाय) को खून खराबे से बचाने के लिए अपनी सत्ता को बलिदान दिया था | सुन्नी परंपराओं में पैगंबर मुहम्मद की एक हदीस का हवाला दिया जाता है, जिसमे उन्होंने कहा था, मेरा यह बेटा हसन एक सैय्यद नेता है, और इसके जरिये अल्लाह मुसलमानों के दो बड़े समूहों के बीच सुलह कराएगा | सुन्नी इतिहासकार इस वर्ष को 'आम अल-

जमाह' (एकता का वर्ष) कहते है क्योंकि इसके बाद मुस्लिम साम्राज्य फिर से एक नेतुत्व के तहत एकजुट हो गया था |
शिया इतिहासकारों का मुख्य ध्यान इस बात पर है की मुआविया ने सत्ता संभालते ही संधि की सभी शर्तो को तोड़ दिया | विशेषकर उन्होंने अपने बेटे यज़ीद को उतराधिकारी घोषित किया, जिससे खिलाफत हमेसा के लिए राजशाही में बदल गई थी | शिया यह भी मानते है की बाद में हजरत हसन को जहर देकर शहीद करने के भी संधि की शर्तो को पूरी तरह ख़त्म करने की साजिश थी |

कर्बला-ए-मैदान में हुसैन 02 मुहर्रम, 61 हिजरी से लगातार खेमें लगाकर वहाँ रहे थे | लेकिन शिया या सुन्नी दोनों में से कोई भी बचाने के लिए नहीं गया था? क्यों नहीं गया था? इसलिए सभी हुसैन का समर्थक है | नहीं तो कोई नहीं है | जो लोग या जहाँ के लोग हुसैन को ख़त लिखकर बुलाया था और बाद में बदल गया था | कुछ देर (समय) के किए उसको कुछ भी बोल सकते है वो दोषी है की बुला के पीछे हटना बहुत बड़ा धोखा है | इसलिए धोखेबाज कौन है उसको इतिहास बताता है |
पहला से यज़ीद तक का खलीफा किस प्रकार चुने गए थे वो इस प्रकार है :

क्रम	खलीफा – शासक	अभियुक्ति
पहला खलीफा	हजरत अबू बक्र सिद्दीकी	चुनाव और (एकमत) सर्व सम्मति से |
दूसरा खलीफा	हजरत उमर इब्र अल खाताब	चुनाव और (एकमत) सर्व सम्मति से |
तीसरे खलीफा	हजरत उस्मान बिन अफ्फान	चुनाव और (एकमत) सर्व सम्मति से |
चौथे खलीफा	हजरत अली इब्रे अबू तालिब	चुनाव और (एकमत) सर्व सम्मति से || (पैगंबर मुहम्मद के चचेरे भाई या दामाद था) |
पाचवां	हसन इब्न अली	चुनाव और (एकमत) सर्व सम्मति से | हजरत अली इब्रे अबू तालिब का बेटा (वह केवल 6 महीने)
छठा (पहला) खलीफा	हजरत अमीर मुआबिया	विवाद था ; शांति संझौता के बाद खलीफा बनाया गया था | इस वजह से उन्हें उमय्यद वंश का पहला खलीफा और बुनियाद रखने वाला माना जाता है।
सातवा खलीफा	याजीद इब्रे मुआविया	हजरत अमीर मुआबिया का बेटा याजिद था वंसवाद शासक

तालिका 08- ये चित्र इराक के खलीफा को चुनाव और (एकमत) सर्व सम्मति से | और वंसवाद को दर्शाता है |

यज़ीद जो इमाम हुसैन की शहादत और कर्बला के वाकिया की वजह से मुसलमानों की तारीख में एक ज़ालिम और विवादित शख्सियत माना जाता है | शिया और सुन्नी दोनों फिरकों की तारीख और नजरियात में हमारा मकाम मुख्तलिफ है।
जब इस्लाम में शिया और सुन्नी का विभाजन (विवाद) पूरी तरह से गहराया, उस समय यज़ीद प्रथम उमय्यद खिलाफत (राजशाही) का शासक था। वैचारिक रूप से देखा जाए तो यज़ीद को न तो सच्चे शियाओं में गिना जाता है और न ही आज के दौर के पारंपरिक सुन्नी उसे अपना हिस्सा मानते हैं, क्योंकि उसने पैगंबर मुहम्मद के नवासे इमाम हुसैन को कर्बला की जंग में शहीद करवाया था। इसलिए इमाम हुसैन को शिया और सुन्नी दोनों याद करते है | और कुछ हिन्दू समुदाय के लोग भी याद करते है मुहर्रम में |

<u>वंशावली:</u> इमाम हुसैन और यज़ीद दोनों का खानदान एक ही कुरैशी मूल वंश से आता है | इस तालिका में अपष्ट साझा पूर्वज अब्द मनाफ़ है |

क्र०	इमाम हुसैन का वंश	यज़ीद का वंश
1	**----------अब्द मनाफ़ ----------**	
2	हाशिम	अब्द शम्स
3	अब्दुल-मुत्तलिब	उमय्या
4	अबू तालिब	हर्ब

5	अली इब्न अबी तालिब	अबू सुफ़यान
6	इमाम हुसैन इब्न अली	मुआविया इब्न अबी सुफ़यान
7	---	यज़ीद इब्न अबी मुआविया

तालिका 09- इमाम हुसैन और यज़ीद के परिवार वंश को दर्शाता है |
इमाम हुसैन और यज़ीद दोनों कुरैश के थे और उनका साझा पूर्वज अब्द मनाफ़ था | हुसैन बनू हाशिम की शाखा से थे, और यज़ीद बनू उमय्या / अब्द शम्स की शाखा से थे | उनके बीच कई पीढियों का अंतर था |

02. साहित्य समीक्षा:-

सातवीं सदी का पहला हिस्सा पैगंबर मोहम्मद (मृत्यु 632) और शुरुआती खलीफ़ाओं के असली उत्तराधिकारी को लेकर राजनीतिक संघर्ष और विवाद का समय था। इतिहासकार बताते है कि सुन्नी-शिया बंटवारा मुख्य रूप से चौथे खलीफ़ा अली के उत्तराधिकारी को लेकर हुए विवाद के कारण हुआ था। दूसरे और तीसरे खलीफ़ाओं की तरह अली की भी हत्या कर दी गई थी; इसके बाद सीरिया के गवर्नर मुआविया, जिन्होंने अली के खिलाफ़ बगावत की थी, सत्ता में आए और उमय्यद खलीफ़ाओं (शासनकाल 662-750) का शासन स्थापित किया था [2]।

कट्टर शिया विद्वानों का तर्क है कि मुआविया की मौत के बाद, उनका बेटा यज़ीद 680 में चुनाव या लोकप्रियता के बजाय वंशानुगत नियुक्ति से उनका उत्तराधिकारी बनना। नतीजतन, मुस्लिम समाज दो मुख्य हिस्सों में बंट गया: अली के परिवार के समर्थक, जिन्हें 'शियात-अल-अली' यानी अली का गुट कहा गया, और मुआविया के परिवार के समर्थक, जिन्हें सुन्नी कहा गया। उमय्यद और यज़ीद के शासन की वैधता को लेकर हुए विवाद के कारण 680 ईस्वी में कर्बला (आधुनिक इराक) में आशूरा के दिन—मुहर्रम महीने की 10 तारीख को एक दुखद लड़ाई हुई, जिसमें अली के दूसरे बेटे और पैगंबर के नवासे इमाम हुसैन और उनके कुछ साथियों को शहीद कर दिया गया था [3]।

लेकिन शोध साक्षात्कार से प्राप्त अकड़े के अनुसार कुछ लोग ये बताते है की अमीर मुआविया ने हुसैन को खलीफा बनान चाहता था | यज़ीद धोखे से खलीफा बन गया था |
हालांकि मुसलमानों का सुन्नी और शिया गुटों में बंटवारा आशूरा की त्रासदी से पहले ही हो गया था, लेकिन इस घटना ने इस बंटवारे को और भी पक्का कर दिया। शिया नज़रिए से, कर्बला की त्रासदी सिर्फ़ एक राजनीतिक विवाद के कारण हुई थी | ऐतिहासिक लड़ाई से कहीं ज़्यादा है; यह 'मेटा-हिस्ट्री' (इतिहास से परे की घटना) का रूप ले चुकी है। इस त्रासदी की याद ने शिया सोच और पहचान को इतना गहरा असर डाला है कि माइकल फिशर ने इसे 'कर्बला प्रतिमान' (पैराडाइम) कहा है। उनका कहना है कि यह त्रासदी 'इस्लाम और इस्लामी इतिहास के बारे में शिया और सुन्नी समझ के बीच स्पष्ट अंतर करने का एक ज़रिया देती है' [4]।

इतिहासकार विद्वानों ने रीती रिवाजों को भी परिभाषित किया और लोगों के जीवन में उनके महत्व को बताया | उनके नजरिये से, रीति-रिवाज ऐसे सांस्कृतिक साधन हैं जो सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में मदद करते हैं और किसी खास सामाजिक संदर्भ में इंसान जिंदगी के जटिल और विरोधाभासी पहलुओं को समझने का जरिया देते हैं | रीति रिवाज हमारे जीवन और जीवन चक्र को एक ढाचा देते है ; वे बदलाव को चिन्हित करते हुए समूह को व्यवस्था और स्थिरता प्रदान करते है [5] |

लगभग एक सदी पहले, सियाल जनजाति की एक उप–शाखा, कुरियन परिवारों ने दो गांवों के चौराहे पर इमामबरगाह हुसैनीया की स्थापना की थी | उनके पूर्वजों में से एक ने ईरान, इराक और सीरिया में पवित्र स्थलों की तीर्थयात्रा की थी | लौटने पर, उन्हें इमाम हुसैन और उनके परिवार के महान शहादत से जुड़ी रस्मों को मनाने के लिए एक इमामबरगाह बनाने की जरुरत महसूस हुई | नंगा परिवारों ने भी इमामबरगाह के लिए जमीन खरीदने और मुहर्रम की रस्मों के आयोजन की व्यवस्था करने में मदद किया [6] |

गाँव के लोग धार्मिक रूप से सक्रिय थे और मुहर्रम की रस्मों में हिस्सा लेना अपना नैतिक कर्तव्य मानते थे | ये रस्में आम तौर पर मुहर्रम का चाँद दिखने के साथ शुरू होती है | मुहर्रम के पहले दिन शाम को गाँव वाले मातम के लिए गाँव के बीच में इकट्ठा होते है | और मातम मनाते है; मातम मतलब होता है की शहीद होने वालो के लिए याद जताना | शिया समुदाय में इसका मतलब हुसैन और कर्बला के दुसरे शहीदों के लिए याद करना है ; यह ज्यादातर बार-बार छाती पीटने के रूप में होता है [7] |

मुहर्रम के 09 वे दिन के रात में सफ़ेद रंग वाला; लकड़ी और बास के कामाची से बनाया गया ताज़िया इमामबाड़े के आंगन में एक तय जगह पर रखा जाता था | ताज़िया कर्बला में इमाम हुसैन के (मज़ार) मकबरा की नक़ल होता है | अलग-अलग गांवों से श्रद्धालुओं के बीच सार्वजनिक जगहों पर भी ताज़िया का प्रदर्शन बहुत पुराना रिवाजों था [8] |

इतिहासकार विद्वानों ने अलम शब्द के बारे में बताते हुए कहा है की इसका इस्तेमाल शायद युद्ध से जुड़ा था | ये सिर्फ लड़ाई के समय किसी खास गुट की पहचान कराते थे ; बल्कि शायद योद्धाओं के लिए एक मनोवैज्ञानिक केंद्र भी होते थे | आम तौर पर झंडे का गिरना; हार का संकेत माना जाता था | परंपरा के अनुसार, अली ने लड़ाई के दौरान पैगंबर का झंडा उठाया था ; उसी प्रकार एक पीढ़ी बाद हुसैन के सौतेले भाई अब्बास ने यज़ीद के ख़िलाफ़ लड़ाई में युद्ध का झंडा उठाया था [9] |

शोध प्रश्न 1- इमाम हुसैन को कर्बला के मैदान में क्यों शहीद किया गया था?
शोध प्रश्न 2 - मुहर्रम पर्व गांव-गांव में कैसे विस्तार हुआ था?
शोध प्रश्न 3- मुहर्रम मानने का नियम (रस्म) क्या है?

03. कर्बला का युद्ध:-

कर्बला शहर इराक की राजधानी बगदाद से लगभग 100 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। कर्बला शहर इस पूरे प्रांत का मुख्य प्रशासनिक केंद्र और सबसे बड़ा ज़िला है। यह शिया मुस्लिम समुदाय के लिए एक अत्यंत पवित्र शहर है, जहाँ इमाम हुसैन और उनके भाई इमाम अब्बास के पवित्र मज़ार स्थित हैं। यहाँ हर साल 'अरबईन' के मौके पर दुनिया का सबसे बड़ा मानवीय जमावड़ा होता है। मुहर्रम इस्लाम धर्म के सबसे महत्वपूर्ण महीनो में से एक है | इस्लामी परंपरा के अनुसार यह हिजरी साल (वर्ष) का प्रथम महीना है और इसे पवित्र महीनों में गिना जाता है | मुहर्रम का महत्व केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि नैतिक और मानवीय मूल्यों की दृष्टि से भी अत्यंत व्यापक है | अमीर मुआविया की (मृत्यु) निधन के बाद ही उनके बेटे यज़ीद ने वंसागत तरीके से सत्ता संभाली थी और इमाम हुसैन से निष्ठा की समर्थन की माँग की थी, जिसके विरोध में कर्बला की घटना घटी थी [10] |

कर्बला की घटना ने मुहर्रम को विश्व इतिहास में विशिष्ट स्थान प्रदान किया है। इमाम हुसैन ने अन्यायपूर्ण सत्ता के समक्ष झुकने के बजाय सत्य और न्याय के पक्ष में संघर्ष का मार्ग चुना था। उनका बलिदान यह संदेश देता है कि नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं करना चाहिए। 680 ईस्वी में कर्बला की घटना ने इस महीने को विशेष ऐतिहासिक महत्व प्रदान किया है। इमाम हुसैन ने अन्याय के सामने समझौता करने के बजाय सत्य और न्याय के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाया था। यही कारण है कि मुहर्रम आज भी केवल एक धार्मिक अवसर नहीं, बल्कि नैतिक साहस और मानवीय गरिमा के प्रतीक के रूप में स्मरण किया जाता है [23]।

'मुहर्रम' शब्द का अर्थ है—"पवित्र" या "जिसका सम्मान किया जाए"। इस्लाम-पूर्व अरब समाज में भी इस महीने को युद्ध-विराम और शांति का समय माना जाता था। इस्लाम के आगमन के बाद भी इसकी पवित्रता को स्वीकार किया गया | कर्बला का युद्ध के समय दोनों कैलेंडर प्रणालियां पूरी तरह अलग हैं। हालांकि, इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना कर्बला का युद्ध इसी साल हुआ था, जिसमें दोनों कैलेंडर की तारीखों में अंक '10' का एक संयोग मिलता है:
अंग्रेजी तारीख: 10 अक्टूबर 680 ईस्वी

इस्लामिक तारीख: 10 मुहर्रम 61 हिजरी (जिसे आशूरा का दिन कहा जाता है) इस विशेष दिन दोनों ही कैलेंडर में 10 तारीख थी

अंग्रेजी तारीख (680 AD)	इस्लामिक तारीख (60-61 AH)	विशेष ऐतिहासिक संदर्भ
1 जनवरी 680	23 रबी अल-अव्वल 60 हिजरी	सामान्य दिन
1 अक्टूबर 680	2 मुहर्रम 61 हिजरी	इमाम हुसैन का कर्बला पहुँचना
9 अक्टूबर 680	9 मुहर्रम 61 हिजरी	तासुआ (कर्बला की लड़ाई से एक दिन पहले)
10 अक्टूबर 680	10 मुहर्रम 61 हिजरी	कर्बला का युद्ध / आशूरा का दिन

तालिका 10- ये इराक के कर्बला के युद्ध से पहले और युद्ध के दिन को दर्शाता को है |

कर्बला में जो नरसंहार हुआ उसमे मुख्य भूमिका निभाने वाले यज़ीद के कमांडर निम्न प्रकार है :

क्र०	नाम	पद	अभियुक्ति
1	हुर्र बिन यजीद रियाही	कमांडर	इमाम हुसैन ने जैसे ही इराक के सीमा में आया, वैसे ही हुसैन के काफिला को मोड़कर कर्बला के मैदान में पंहुचा दिया था| ये कमांडर हुसैन पर हाथ उठाना नहीं चाहता था	इसलिए इन्होने सोचा की अगर ये कूफा जायेगे तो जरुर शहीद होगे	
2	उमर इब्न साद	कमांडर	यह कर्बला में यज़ीद की मुख्य सेना का कमांडर था	
2	शिमर इब्न दिल-जोशन	कमांडर	यह सेना का कुर्र (ज़ालीम) कमांडर था , जिसने फरात नदी के पानी को हुसैन के खेमें के लिए रोक दिया था	और बाद में हमलों की मुख्य भूमिका निभाई थी	
4	शबात बिन रबी	कमांडर	यह भी कूफा और यज़ीद की सेना का एक प्रमुख कमांडर था	
5	हुसैन इब्न नुमैर अल-सकुनी	मुख्य कमांडर	मदीना और मक्का के अभियानों के दौरान यज़ीद की सेना का मुख्य कमांडर था	
	मुस्लिम इब्न उकबा	मुख्य सेनापति	मदीना (हर्रा की लड़ाई) पर भेजे गए यज़ीद के सैन्य अभियान का मुख्य सेनापति था	
	हुर्र इब्न यजीद अल-तमीमी	कमांडर	शुरुआती दस्ते का कमांडर (युद्ध के दिन पद छोड़कर हुसैन के खेमो में सामिल हो गया और अपना शहादत लिया)	

तालिका 11– यज़ीद के कमांडर जो कर्बला और अन्य युद्ध से समलित था [13] |

हुर्र बिन यज़ीद रैयाही कूफा के गवर्नर उबैदुल्लाह बिन जियाद की सेना के एक प्रमुख कमांडर थे, जिन्हें इमाम हुसैन के मार्ग को रोकने के लिए भेजा था | मुहर्रम की पहली तारीख 61 हिजरी को आशूरा के इतिहास की पड़ताल के अनुसार, जब हुर्र और उनकी पूरी फ़ौज प्यास से बेहाल थी, तब इमाम हुसैन ने इंसानियत का परिचय देते हुए न केवल हुर्र और उनके सैनिकों को बल्कि उनके घोड़ों को भी अपने पास मौजूद सीमित पानी से सैराब किया था |

हुर्र की तौबा और पछतावा: आशूरा के दिन 10 मुहर्रम को जब हुर्र ने देखा कि यज़ीद की फ़ौज इमाम हुसैन पर किसी भी तरह का रहम करने को तैयार नहीं है और जंग टलने की कोई गुंजाइश नहीं बची, तो उनका जमीर जाग उठा था | हुर्र ने कांपते हुए हाथों से अपने घोड़े की लगाम मोड़ी और इमाम हुसैन के खेमों की तरफ आए थे | उन्होंने इमाम हुसैन के सामने आते हुए कहा, या इब्ने रसूलुल्लाह! क्या मेरी तौबा कुबूल हो सकती है ? इमाम हुसैन ने मुस्कुराकर बेहद नरमी से जवाब दिया, हाँ, अल्लाह तुम्हारी तौबा कुबूल करने वाला है, तुम उतर जाओं | हुर्र ने इसके बाद यज़ीद की सेना को ललकारा और इमाम हुसैन की तरफ से लड़ते हुए कर्बला में शहादत का जाम पिया था |

कर्बला के नरसंहार में जो हुआ उसमे मुख्य भूमिका निभाने वाले यज़ीद के गवर्नर निम्न प्रकार है :

क्र०	नाम	पद	कहा के	अभियुक्ति
1	उबैदुल्लाह इब्न ज़ियाद	गवर्नर	बसरा	पहले से बसरा में था |
	उबैदुल्लाह इब्न ज़ियाद	गवर्नर	कूफा	कर्बला के युद्ध के समय अतिरिक्त प्रभार दिया गया था |
2	वलीद इब्न उत्बा	गवर्नर	मदीना	ये मदीना के गवर्नर था , जिसे यजीद ने इमाम हुसैन से बैत लेने का आदेश दिया था |
3	नुमान इब्न बशीर	गवर्नर	कूफा	पहले कूफा का गवर्नर था , जिसे बाद में हटाकर ; यजीद ने उबैदुल्लाह इब्न जियाद को वहां का प्रभार दिया गया |
4	अम्र बिन सईद बिन अल-आस	गवर्नर	मक्का	वह मक्का का गवर्नर था |

तालिका12- यज़ीद के गवर्नर की दर्शाता है [13]|

(1) इतिहासकार बताते है, यज़ीद जब वंशवाद तारीखे से खलीफा बना, तो उसने सबसे पहले, हुसैन से निष्ठा का शपथ लेने पर नज़र डाला था | साक्षात्कार से प्राप्त आकडे के अनुसार, कुछ लोग का कहना है की यज़ीद के सलाहकार बोला था; यज़ीद से की खिलाफत को लोकप्रिय बनाने के लिए हुसैन से निष्ठां का शपथ लेना अतिअवश्यक है, नहीं ती खिलाफ़त जल्द ही समाप्त (ख़त्म) हो जाएगा | यज़ीद चाहता था कि सभी प्रमुख लोग उसकी सत्ता स्वीकार करें | लेकिन इमाम हुसैन ने उसके गलत आचरण और वंशवादी शासक के तरीके को देखते हुए समर्थन देने से साफ मना कर दिया था | हुसैन से शपथ लेने के बाद, सभी लोग आपके पक्ष में हो जाएगा | और सलाहकार के द्वारा ये बात भी कहा गया था की, तीन लोगो से होसियार रहना | वो तीन लोग का नाम इस प्रकार है |

क्र०	नाम	अभियुक्ति
1	इमाम हुसैन इब्न अली	पैगंबर मुहम्मद साहब के नवासे और हज़रत अली के बेटे।
2	अब्दुल्लाह इब्न अल-जुबैर	हज़रत जुबैर इब्न अल-अवाम के बेटे।
3	अब्दुल्लाह इब्न उमर	दूसरे खलीफा हज़रत उमर फारूक के बेटे।

तालिका 13- यज़ीद के वंसवाद नियम का विरोध करने वाले को दर्शाता है |

ये जो तीन नाम था इसमें से ; बड़ा नाम इमाम हुसैन इब्न अली का था | सलाहकार ने कहा ; इमाम हुसैन एक सीधे और सम्मानित आदमी है | वो पैगंबर के नवासे है, वो करीबी रिश्तेदार है, और उनका हक बहुत बड़ा है |

इतिहास गवाह है की यज़ीद इमाम हुसैन को वफ़ादारी न मानने की स्थिति में जान से मारने के लिए दृढ संकल्पित था | मदीना में अपने प्रतिनिधि और गवर्नर वलीद इब्न एकबा इब्न अबी सुफियान को लिखे एक पत्र में यज़ीद ने आदेश दिया था | जब मेरा पत्र आप तक पहुँचे, तो अल-हुसैन इब्न अली और अब्दुल्ला इब्न जुबैर को बुला लेना | उनसे मेरी ओर से निष्ठा की शपथ ले लेना | यदि वे निष्ठा की शपथ लेने से इंकार कर दें, तो उनकी गर्दनें काटकर उनके सिर मेरे पास भेज देना [10]|

लेकिन शोध साक्षात्कार से प्राप्त आकड़े के अनुसार कुछ लोग ये बताते है की अमीर मुआविया जब बूढ़े हो गए थे और उनको लगा की अब ज्यादा दिन तक मेरा शासन नहीं चलेगा तो हुसैन को ख़त लिखकर भेजवाया था, अपने दूत (संदेशवाहक) से | की मेरे बाद हुसैन खलीफा बनेगा | साक्षात्कार से प्राप्त सूचना के अनुसार ये कहा जाता है ; की जो ख़त दूत ले जा रहा था उसको यज़ीद ने रास्ते में अपना ख़त से बदल दिया था | यज़ीद अपना ख़त दे कर भेजा, उसमे लिखा था की यज़ीद को वंशवाद तरीके से जीते जी खलीफा बनाने के संबंध में ख़त लिखा था | क्योंकि कुछ लोग ये भी बता रहे है की यज़ीद का चरित्र अच्छा नहीं था | यज़ीद के चरित्र में बहुत तरह के खामिया बताया जाता था | दूत ख़त बदलने से इंकार भी कर रहा था | यज़ीद ने उसे बहुत डराया-धमकाया और ख़त भी फाड़ दिया था और

अपना ख़त दे कर उसे मदीना भेज दिया था | यज़ीद दूत को रास्ते में पकड़ा था | किसी ख़ुफ़िया जानकारी से पता लगाया था |

साक्षात्कार से प्राप्त: कुछ लोग का कहना है की यज़ीद ने अमीर मुआविया के सलाहकार, गवर्नर, कमांडर और सेना को पहले से पैसे और तोहफे के लालच देकर ; वंशवाद का चर्चा कर रहा था और बहुत से लोग मान भी लिया था | इसलिए यज़ीद जब तख़्त पर बैठा तो बहुत कम लोग विरोध किया था | 100 प्रतिशत शुद्धता के लिए कर्बला के समय का प्रमाण का जरुरत पड़ेगा |

कर्बला के घटना से पहले यज़ीद ने कूफा स्थित गवर्नर उबौदुल्लाह बिन ज़ियाद ने मुख्य काज़ी शुरैह को पैगंबर के नवासे इमाम हुसैन के खिलाफ फतवा जारी करने के लिए मजबूर किया था | गवर्नर इब्ने ज़ियाद ने दबाव, राजनितिक रसूख और डर का इस्तेमाल करके काज़ी शुरैह से यह फतवा लिखवाया कि इमाम हुसैन ने खलीफा के खिलाफ, बगावत की है, इसलिए उनका खून जायज़ है |

उस एक फतवे के आधार पर इब्ने ज़ियाद ने दरबार से जुड़े हजारों मुफ्तियों और काजियों से दस्तखत करवाए ताकि इमाम हुसैन के खिलाफ की जाने वाली सैन्य कार्यवाई को धार्मिक रूप से सही ठहराया जा सके | इस फतवे का इस्तेमाल आम जनता को भ्रमित करने और सैनिको को तैयार करने के लिए एक हथियार के रूप में किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप कर्बला की जंग हुई थी |

इसीलिए इमाम हुसैन को कर्बला में शहीद करने के बाद उनके खेमें में आग लगा दिया था | ताकि इमाम हुसैन के पास प्रत्येक सबूत को मिटा सके | क्योंकि कूफा के लोग जो ख़त इमाम हुसैन को जो भेजा था वों सब कर्बला के खेमें में ही था | क्योंकि इमाम हुसैन के साथ सभी परिवार और उनके साथी, मक्का से डायरेक्ट कूफा आ रहे थे |

मदीना में चार लोग थे जिन्होंने यज़ीद को अपना खलीफा मानने से इंकार कर दिया था | वो चार नाम निम्न प्रकार है:

क्र०	नाम	अभियुक्ति
1	इमाम हुसैन इब्न अली	पैगंबर मुहम्मद के नवासे, जिन्होंने यज़ीद के चरित्र और शासन प्रणाली को अस्वीकार करते हुए बैअत करने से साफ मना कर दिया था।
2	अब्दुल्लाह इब्न अल-जुबैर	एक प्रमुख सहाबी के पुत्र, जिन्होंने वंशवादी उत्तराधिकार का विरोध किया
3	अब्दुल्लाह इब्न उमर	पैगंबर के प्रसिद्ध साथी (सहाबी) और खलीफा उमर के पुत्र, जिन्होंने इस राजनीतिक उत्तराधिकार विवाद से दूरी बनाते हुए शुरुआती दौर में यज़ीद की बैअत नहीं की थी
4	अदुर्रहमान इब्न अबू बक्र	पहले खलीफा अबू बक्र के पुत्र, जिन्होंने मुआविया द्वारा वंश के आधार पर सत्ता सौंपने के फैसले की खुले तौर पर आलोचना की और निष्ठा देने से इनकार किया।

तालिका 14- मदीना में चार लोग थे जिन्होंने निष्ठा की शपथ का इंकार कर दिया था [12]|

(2) तख्त पर पैठते ही यज़ीद ने जो पहला काम किया की आने वाले तूफान का रुख तय कर दिया था | उसने मदीना के गवर्नर को एक ख़त भेजा और लिखा की हुसैन मेरे नाम की निष्ठा की शपथ ले; अगर न माने तो सिर कलम कर मेरे पास भेज दिया जाय| ये बात साफ था की यज़ीद, अपने पिता के रास्ते पर नहीं चलना चाहता था [24]|

जब यज़ीद के हुक्म मदीना पंहुचा तो शहर में बेचैनी फ़ैल गया | गवर्नर ने इमाम हुसैन को अपने महल में बुलाया और यज़ीद का पैगाम (फ़रमान) सुनाया | हुसैन समझ गए की मदीना में रहना अब ठीक नहीं होगा | अगर वो निष्ठां के शपथ लेने से इंकार करते है, तो, गवर्नर उन्हें क़त्ल करने पर मजबूर होगा | और हुसैन नहीं चाहते थे पैगंबर

मोहम्मद का शहर खून से लाल हो | तो हुसैन ने गवर्नर से सोचने के लिए कुछ वक्त माँगा | और उसी रात अपने परिवार और कुछ साथियों के साथ मक्का निकल गए थे | जो इस्लाम का सबसे पवित्र शहर माना जाता था | जहाँ किसी भी तरह के खून-खराबी की मनाही थी | उसे हराम माना गया था | हुसैन को लगा वहाँ सुरक्षित रहेगे | लेकिन यज़ीद की नज़र वहा पर भी थी [14]|

क्र०	नाम	तारीख- हिजरी	तारीख- ईस्वी	घटना
	अमीर मुआविया का निधन	राजब 60	अप्रैल 680	दमिश्क
1	यज़ीद खलीफा बना	18 राजब 60	680 ईस्वी	दमिश्क
2	शपथ (बैअत) लेने का ख़त	रजब, 60 हिजरी	अप्रैल 680 ईस्वी	दमिश्क
3	निष्ठां की शपथ के लिए राजमहल बुलाया था	28 रजब 60 हिजरी	4 मई, 680 ईस्वी	मदीना
4	हुसैन मदीना से मक्का जाने का समय	28 रजब 60 हिजरी	लगभग 4-5 मई 680 ईस्वी	रात में प्रस्थान
5	मक्का पहुचने का समय	3 शाबान सन 60 हिजरी	मई/जून 680 ईस्वी	मक्का पहुँचे थे
6	कूफा से मक्का के लिए ख़त- हुसैन के लिए	12 रमजान 60 हिजरी	जून/ जुलाई 680 ईस्वी	लगभग 150 ख़त कूफ़ा से और पहुँचे
7	इसके बाद लगातार ख़त आते रहे। ऐतिहासिक रिवायतों में इनकी कुल संख्या लगभग 12,000 तक बताई गई है			
8	इमाम हुसैन ने अपने चचेरे भाई मुस्लिम इब्न अकील को कूफ़ा की स्थिति जाँचने के लिए मक्का से कूफ़ा भेजा।	15 रमज़ान 60 हिजरी	जुलाई 680 ईस्वी	मक्का से प्रस्थान
9	मुस्लिम इब्न अकील मक्का से मदीना कब पहुंचा थे ?			मक्का से कूफ़ा की ओर रवाना हुए और रास्ते में मदीना गए
10	उसके बाद मदीना से कूफा कब पहुँचे थे ?	5 शव्वाल , 60 हिजरी जुलाई/ अगस्त 680 ईस्वी	लोगों से इमाम हुसैन के लिए बैअत लेना शुरू किया।	कूफ़ा पहुँचकर मुख़्तार बिन अबी उबैद के घर ठहरे थे	
11	मुस्लिम इब्न अकील के साथ मदीना से कूफा जाने में दो सलाहकार भी था		5 शव्वाल 60 हिजरी को कूफ़ा पहुंचे थे	
12	मुस्लिम इब्न अकील के साथ कूफा के लोग छोड़ रहा था	ज़िलकादा	अगस्त 680 ईस्वी	उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के डर से
13	मुस्लिम बिन अकील कूफा में कितना दिन जीवित रहे थे ?	64 दिन		
14	मुस्लिम बिन अकील की शहादत कब हुआ था ?	9 ज़िलहिज्जा 60 हिजरी	10 सितम्बर 680	इराक के कूफा शहर में
15	इसलिए सीधा जवाब: कूफ़ा वालों के ख़त इमाम हुसैन को मुख्य रूप से मक्का में मिले थे, मदीना में नहीं।			
16	इमाम हुसैन (अ.) ने मक्का से कूफ़ा	8 ज़िलहिज्जा 60 हिजरी	09 सितंबर 680	मक्का से कूफा

	की ओर प्रस्थान किया।		ईस्वी	के लिए प्रस्थान।
17	कूफ़ा जाने के लिए वे 8 ज़ुलहिज्जा 60 हिजरी (10 सितंबर 680 ईस्वी) को मक्का से अपने परिवार और साथियों के साथ रवाना हुए थे, लेकिन कूफ़ा पहुँचने से पहले ही (लगभग 70-80 किलोमीटर पहले) यज़ीद की सेना ने उन्हें कर्बला के मैदान में रोक लिया था। वहीं 2 मुहर्रम 61 हिजरी (2 अक्टूबर 680 ईस्वी) को उन्होंने डेरा डाला और 10 मुहर्रम (आशूरा, 10 अक्टूबर 680 ईस्वी) को उन्हें तथा उनके साथियों को कर्बला में शहीद कर दिया गया था।			

तालिका15- कर्बला से पहले तक का घटना को दर्शाता है।

कर्बला का घटना क्रम; जो उपर्युक्त तारीख वार दर्शाया गया है। उसको आसानी से समझने के लिए इस्लामिक और अंग्रेजी कैलेंडर को एक साथ दिया गया है। इस्लामिक कैलेंडर में अंग्रेजी कैलेंडर से एक दिन आगे-पीछे हो सकता है। कैलेंडर इस प्रकार है :

S.N	1447-1448 हिजरी (इस्लामिक)	2025 - 2026 (अंग्रेजी)	60-61 हिजरी (इस्लामिक)	680 ईस्वी अंग्रेजी
1	जुमादा अल-अव्वल (01-30)	(19 Oct) – (17 Nov)	जुमादा अल-अव्वल (01-30)	(1-31) –Feb 680
2	जुमादा अल-थानी (01-29)	(18 Nov) – (16 Dec)	जुमादा अल-थानी (01-29)	(1-31) – Mar 680
3	रजब (01-30)	(17 Dec) – (15 Jan)	रजब (01-30)	(1-30) – Apr 680
4	शाबान (01-29)	(16 Jan) – (13 Feb)	शाबान (01-29)	(1-31) – May 680
5	रमज़ान (01-30)	(14 Feb) – (15 Mar)	रमज़ान (01-30)	(1-30) – Jun 680
6	शव्वाल (01-29)	(16 Mar) – (13 Apr)	शव्वाल (01-29)	(1-31) – Jul 680
7	जी अल-क़ादाह (01-30)	(18 Apr) – (17 May)	जी अल-क़ादाह (01-30)	(1-31) – Augt 680
8	जी अल-हिज्जा (01-29)	(18 May) – (15 Jun)	जी अल-हिज्जा (01-30)	(1-30) – Sept 680
9	मुहर्रम (01-30)	(16 June) – (15 July) -	मुहर्रम (01-30)	(1-30) – October 680
10	सफ़र (01-29)	(16 July) – (13 Aug)	सफ़र (01-29)	(31 Oct) - (28 Nov)
11	रबीउल अव्वल (01-30)	(14 Aug) – (12 Sep)	रबीउल अव्वल (01-30)	(29 Nov) - (28 Dec)
12	रबी अल-थानी (01-29)	(13 Sep) – (11 Oct)	रबी अल-थानी(01-29)	(29 Dec) - (26 Jan 681)

तालिका 16- कर्बला का पूरा घटना क्रम के दोनों कैलेंडर को समय को दर्शाता है।

(3) हुसैन जब मक्का में थे, तब तक कूफा के लोग भी यज़ीद के खिलाफ क्रांति के लिए तैयार हो गया था, जब इमाम हुसैन के पास कूफा शहर से ख़तों का सैलाब आना सुरु हो गया था। सभी ख़त में एक ही बात लिखा था; ये पैगंबर के नवासे, हमारे पास कोई इमाम नहीं है, यज़ीद की हुकूमत ज़ालिम है, आप कूफा आइए हमलोग आपके हाथ पर शपथ करेगे, और इस जुल्म के खिलाफ आपके झंडे तले जंग लड़ेगें [15]।

शुरुआत में, इमाम हुसैन ने इनकी खतों पर यकीन नहीं किया। और बोला की ये वही लोग है, जो हज़रत अली को आखरी वक्त में छोड़कर चले गए थे। लेकिन जब खतों का आना बंद नहीं हुआ तो उन्होंने, हालात का जायजा लेने के लिए अपने चचेरे भाई मुस्लिम बिन अकील को कूफा भेजा; की जाओ देखो, हो क्या रहा है। मक्का से निकलने के बाद वे पहले मदीना गए थे। जहाँ से उन्होंने सफ़र के लिए दो मार्गदर्शक साथ लिए थे। मदीना से कूफा का रास्ता भटक गए थे। प्यास के कारण दोनों मार्गदर्शकों मौत हो गई थी। लेकिन मुस्लिम बिन अकील बड़ी मुश्किलों का सामना करते हुए सुरक्षित कूफा पहुँचने में कामयाब रहे थे। कूफा पहुँचकर वे सबसे पहले मुख़्तार अल-थकफी के घर पर ठहरे। वहाँ पर कूफा के शियाओं और आम लोगों ने उनका ज़ोरदार स्वागत किया और हजारो की संख्या में इमाम हुसैन के प्रति अपनी बफादारी की बैयत (शपथ) लिया था। मुस्लिम बिन अकील कूफा में कुल 63 दिन तक जीवित रहे थे। मक्का से मदीना पहुचने में 7 से 8 दिन लगा था। मदीना आने का उद्धेश्य अपने परिवार से मिलना था। मक्का से मदीना होते हुए कूफा तक की उनकी पूरी यात्रा में लगभग 20 दिन लगे थे। मक्का से मदीना की दुरी लगभग 410 – 440 किलोमीटर थी। उन्होंने 14 रमजान 60 हिजरी को मक्का से प्रस्थान किया था। सामान्य रफतार

से ऊंट की सवारी द्वारा मक्का से मदीना का सफ़र लगभग 8 से 10 दिनों में पूरा होता था | 5 शव्वल 60 हिजरी को कूफा पहुँचे थे | प्राचीन समय में मदीना से कूफा की दुरी लगभग 1000 किलोमीटर से अधिक थी |

हानी इब्न उरवा अल-मुरादी- ये कूफा शहर के एक सम्मानित और प्रभावशाली कबीलाई बुजिर्ग थे | उन्होंने इमाम के दूत मुस्लिम बिन अकील को अपने घर में शरण दी थी और अहले वैत के प्रति वफादारी निभाते हुए गवर्नर उवैदुल्लाह इब्न ज़ियाद के आदेश पर कर्बला की जंग से ठीक पहले शहादत दी थी | हज़रत मुस्लिन बिन अकील की शहादत के बाद उनके दोनों बेटों को कूफ़ा में कैद कर लिया गया था | बाद में वे किसी तरह जेल से निकल भागे, लेकिन कूफ़ा के एक ज़ालिम हाकिम हारिस के घर उन्हें शरण जैसी स्थिति मिली, मगर लालच या डर की वजह से उस शख्त ने उन मासूमों को पहचान लिया | और 9 धुल हिज्जा या उसके आसपास के दिनों में उन दोनों बच्चों को नदी किनारे ले जाकर बेरहमी से क़त्ल कर दिया गया | उनके शव को फरात नदी में प्रवाहित कर दिया था |

जब मुस्लिम बिन अकील कूफा पंहुचा तो उनका ऐसा स्वागत हुआ की जैसे किसी की कोई उम्मीद नहीं थी | हजारो लोग मिलने आये और देखते देखते बारह हजार लोग से अधिक उसके हाथ पर इमाम हुसैन नाम के शपथ ले लिया था | ये सब देख कर मुस्लिम बिन अकील को यकींन हो गया की कूफा में क्रांति के लिए जमीन तैयार है | मुस्लिम बिन अकील ने तत्काल हुसैन को पत्र लिखा और बोला की आप जल्दी यहाँ आईए, यहाँ एक पूरी फ़ौज आपका इंतेजार कर रही है | ये ख़त हुसैन के लिए एक उम्मीद की किरण बना, लेकिन असल में एक धोखा साबित हुआ था [16] |

(4) जैसे ही यज़ीद को ये खबर मिली की कूफा के लोग बगावत के लिए तैयार है, वैसे ही अपने सबसे चालक गवर्नर को कूफा भेज दिया, उसका नाम था उबैदुल्लाह इब्न ज़ियाद | उबैदुल्लाह इब्न ज़ियाद भेष बदलकर कूफा में दाखिल हुआ था | अपना चेहरा छुपा रखा था | और वहाँ के लोगो ने उसे इमाम हुसैन समझ कर उसका ही स्वागत कर दिया था और नारे लगाने लगे | जब उबैदुल्लाह इब्न ज़ियाद गवर्नर महल पंहुचा और अपना मुँह खोला तो, पुरे शहर में सन्नाटा (ख़ामोशी) पसर गया था | उबैदुल्लाह इब्न ज़ियाद ने अगले दिन कूफा के मस्ज़िद से भाषण दिया की जो भी लोग हुसैन और उसके दूत को मदद करेगा, उसे बिना मुकदमा चलाये सूली पर चढ़ा दिया जाएगा और घर से बाहर कर दिया जाएगा [25]|

इसका असर तुरंत हुआ जो शहर कल तक मुस्लिम बिन अकील के साथ खड़ा था वो सब बदल गया था | शाम तक हालत ये हो गई जब मुस्लिम बिन अकील मस्जिद में नवाज सुरु की तो उनके बीच हजारों लोग थे | और जब नमाज़ ख़त्म हुआ तो एक भी नहीं था | कूफा के गलियों में अकेले रहता था [23]|

जब मुस्लिम बिन अकील कुफे की गलियों में अकेले रह गए, तो प्यास की शिधत में वह तौआ नाम की एक नेक खातून के घर के बाहर रुके थे | इनका संवाद इस प्रकार है :

क्र०	मुस्लिम बिन अकील	तौआ (खातून)
1	तौआ नाम की एक नेक खातून के घर के बाहर रुके थे		ऐ बंदे-खुदा! तुम अपने घर क्यों नहीं जाते? तुम्हारा यहाँ बैठना मुनासिब नहीं	
2	इस शहर में मेरा कोई घर या कबीला नहीं है	क्या मुझे थोड़ा पानी मिल सकता है ? पानी पीने के बाद भी जब वह वहीँ बैठे रहे		तो तौआ ने कहाः तुम्हारा यहाँ रुकना मेरे लिए ठीक नहीं	अपने अहलो-अयाल (परिवार) के पास जाओ	
3	ऐ खुदा की बंदी ! मेरा इस शहर में न कोई घर है न कोई मददगार	मैं मुस्लिम बिन अकील हूँ		

	कुफियों ने मुझसे गद्दारी की और मुझे तन्हा छोड़ दिया।	

तालिका 17- मुस्लिम बिन अकील का संवाद कूफा में।

जब इब्ने ज़ियाद के सिपाहियों ने उन्हें घेर लिया और वह जख्मी हो गए, तो उन्होंने रोते हुए मोहम्मद बिन अशअथ से कहा : अगर तुम कर सको, तो इमाम हुसैन तक मेरा यह पैगाम पहुँचा दो कि वह कूफा न आएं। कुफियों ने धोखा दिया है।

एक औरत ने उन्हें एक दिन अपने घर में पनाह दी लेकिन उसके बेटे ने ही सुबह जाकर उबैदअल्लाह इब्न ज़ियाद को सूचना दे दिया। मुस्लिम बिन अकील को गिरफ्तार किया गया। और अपने मौत से पहले किसी तरह इमाम हुसैन तक अपना आखरी पैगाम भेजवाया और उसमे कहा की यहाँ मत आना यहाँ के लोग ने तुम से और मुझ से दोनों से झूठ बोला है। इसके बाद उबैदुल्लाह इब्न ज़ियाद के हुक्म पर मुस्लिम बिन अकील का सिर कलम कर दिया गया। उबैदुल्लाह इब्न ज़ियाद के गवर्नर बनने और हालात बदलने के बाद 09 जिलाहिजा 60 हिजरी को कुफ़ा के गवर्नर हाउस की छत पर उसे शहीद कर दिया गया। उसके बाद उच्चे छत से निचे फेक दिया गया [16]।

(5) उधर इमाम हुसैन को मुस्लिम बिन अकील का पहला ख़त मिलते ही हुसैन अपने परिवार के साथ मक्का से कूफा के लिए निकल चुके थे। जब रास्ते में थे तो उन्हें दूसरा ख़त मुस्लिम बिन अकील का मिला तो इमाम हुसैन ने अपने परिवार और साथियों को बताया की ऐसा-ऐसा बात लिखा हुआ है। उनके साथ थोड़े-बहुत लोग इसलिए साथ थे की कुछ अच्छा होगा, वो सब उन्हें छोड़कर चले गए। और बचे सिर्फ 72 बफादार साथी और उनके परिवार। उनके साथियों ने उनसे वापस घर मदीना (मक्का) लौटने की गुजारिस की ; लेकिन हुसैन ने जवाब दिया अब बहुत देर हो चुकी है। इन्सान अँधेरे में सफ़र करता है, और उसकी किस्मत भी अँधेरे में उसी की तरह सफ़र करती है। जो होना है; वो होगा। हुसैन का छोटा स काफिला आगे बढ़ता रहा [16]।
इमाम हुसैन का मक्का से कर्बला तक आने का मुख्य पड़ाव इस प्रकार है :

क्र०	पड़ाव का नाम	मुलाकात करने वाले यात्री (शख्सियत)	बातचीत का मुख्य विवरण
1	सफ़ाह	फरज़दक़ (प्रसिद्ध अरब कवि)	इमाम ने कूफ़ा के हालात पूछे। फरज़दक़ ने ऐतिहासिक जवाब दिया : लोगों के दिल तो आपके साथ हैं, लेकिन उनकी तलवारें आपके ख़िलाफ़ (उमय्यदों के साथ) है। इमाम ने कहा कि मामला अल्लाह के हाथ में है।
2	ज़ात-ए-इर्क	अब्दुल्लाह इब्न ज़ाफर (इमाम हुसैन के चचेरे भाई)	वे अपने बेटों और मोहम्मद को लेकर आए उन्होंने इमाम को कूफ़ा न जाने और मदीना लौट चलने की विनती की, लेकिन इमाम ने कहा कि उन्होंने नाना (पैगंबर मोहम्मद) को ख्वाब में देखा है और वे अपने मिशन पर आगे बढ़ेंगे।
3	बत्न-ए-रुम्मा	अब्दुल्लाह बित मुती	इराक़ से आ रहे अब्दुल्लाह बिन मुती ने इमाम हुसैन का स्वागत किया और उन्हें कूफ़ा के लोगों पर भरोसा न करने तथा आगे न बढ़ने की सलाह दी इमाम ने कहा कि कूफ़ा वालों के पत्रों के कारण ही वे जा रहे हैं।
4	ज़ुरुद	ज़ुहैर इब्न कैन	ज़ुहैर शुरुआत में इमाम के काफ़िले से बच रहे थे। इमाम ने संदेश भेजकर उन्हें बुलाया। बातचीत के बाद इमाम के नूर और उनके पवित्र मकसद से प्रभावित होकर ज़ुहैर अपनी संपत्ति पत्नी को सौंपकर इमाम के साथ हो गए और कर्बला में शहीद हुए।
5	सअलबिया	बनी असद कबीले के	यहाँ इमाम हुसैन को कूफ़ा से आ रहे यात्रियों के ज़रिये उनके

		दो यात्री	चचेरे भाई हज़रत मुस्लिम बिन अकील और हानी इब्न उरवा की क्रूर शहादत की पहली पक्की ख़बर मिली	इमाम ने बेहद दुखी होकर- इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि रजिऊन पढ़ा	हम अल्लाह के हैं और उसी की तरफ लौट जाना है	इसके बाद उन्होंने अपने साथियों से कहा कि जो जाना चाहते है वह जा सकते है, क्योंकि आगे का रास्ता सिर्फ शहादत का है	
6	ज़ुबाला	कूफा की ओर से आ रहे संदेशवाहक	यहाँ इमाम हुसैन को उनके दुधभाई अब्दुल्लाह इब्न यक्तर की शहादत की दुखद ख़बर मिली	इमाम ने यहाँ अपने साथियों को साफ़ बता दिया कि कूफ़ा वालों ने धोखा दिया है, जो जान चाहता है वह जा सकता है	
7	बतन-ए -एकबा	अम्र इब्न लाउज़ान	उन्होंने इमाम से विनती की कि वे आगे न जाएँ क्योंकि वहाँ केवल तलवारें और मौत उनका इंतेजार कर रही हैं	इमाम ने कहाँ कि वे इस बात से वाकिफ़ हैं	लेकिन अल्लाह का हुक्म टला नहीं जा सकता	
8	नौनावा पड़ड़ाव	दोपहर में आराम के दौरान इमाम ने अचानक जागकर कहा, मैंने सपने में देखा की एक घुड़सवार कह रहा है कि ये काफिला आगे बढ़ रहा है और मौत इनके पीछे चल रही है		अली अकबर ने पूछा बाबा जान, हम हक़ (सच्चाई) के रास्ते पर नहीं है? इमाम ने कहा, हाँ बेटा हम हक़ पर है	तब अली अकबर ने निडरता से कहा : फिर हमें मौत की कोई परवाह नहीं, चाहे हम मौत पर जा गिरे या मौत हम पर आ गिरे	
9	शराफ	हूर इब्न यज़ीद अल-तमीमी	हूर1000 सैनिको के साथ इमाम का रास्ता रोकने आया था	वे बेहद प्यासे थे	इमाम ने दरियादिली दिखाते हुए हूर की पूरी सेना और उनके घोडों को पानी पिलाया	नमाज़ के बाद हूर ने कहा की उसे इमाम को कूफ़ा जाने से रोकने और इब्न ज़ियाद के पास ले जाने का हुक्म है यहीं से रास्ते बदला	
10	कर्बला	जब इमाम का घोड़ा एक जगह आ कर रुक गया और आगे नहीं बढ़ा तो इमाम ने पूछा की इस जगह का नाम क्या है? एक बूढा व्यक्ति ने कहा की इसे कर्बला भी करते है		इमाम ने कहा यही कब्र (दुख) और बला (मुसीबत) की जगह है	यहीं हमारे ऊँट बैठेगे, यहीं हमारे खेमें लगेगें और यही हमारा खून बहेगा	इसके बाद यही इमाम का पड़ड़ाव हमेसा के लिए रुक गया था	

तालिका 18- इमाम हुसैन से संवाद, मक्का से कर्बला आने को दर्शाता है |

(6) इमाम हुसैन का काफ़िला जैसे ही इराक के सीमा में दाखिल हुआ यज़ीद के सैनिको की एक टुकड़ी ने उन्हें रोक लिया; इसका कमांडर था हुर्र इब्न यज़ीद अल-तमीमी | यह एक सम्मानित सैनिक था ; और वो पैगंबर मोहम्मद के नवासे पर हाथ उठा नहीं चाहता था | तो उसने इमाम हुसैन का रस्ता मोड़कर एक बंजर मैदान के तरफ कर दिया | उसे लगा की कूफा जायेगें तो जरुर शहीद होगें | इस समय का जो तारीख था वो 02 मुहर्रम 61 हिजरी था | हुसैन इसी तरह कर्बला के मैदान में पंहुचा | और अपना खेमें लगार रहने लगा | और वहाँ पानी का साधन था फरात नदी [17] |

हुर्र जो यज़ीदी की फ़ौज का अफसर था: वे कूफ़ा के उमय्यद गवर्नर इब्न ज़ियाद को खबर भेजी कि हुसैन कर्बला में ठहरे हुए है | इब्न ज़ियाद ने जवाब में एक ख़त भेजा और धमकी दी कि जब तक हुसैन यज़ीद की हुकूमत को नहीं मानते, उन्हें चैन से नहीं रहने दिया जाएगा | उवैदुल्लाह ज़ियाद के आदेश पर पूरी विशाल सेना का मुख्य सेनापति उमर इब्न साद बना, जिसने कर्बला में घेराबंदी का नेतुत्व किया था |

(7) यज़ीद को जैसे ही पता चला की इमाम हुसैन कर्बला में मैदान में आ गया है; वैसे ही 4000 सैनिक कर्बला भेज दिया | और इसका कमांडर था शिमर इब्न दिल-जोशन | शिमर इब्न दिल-जोशन ने आते ही पहला काम ये किया की 07 मुहर्रम, 61 हिजरी से; फरात नदी का पानी जो हुसैन के खेमें में जाता था | उसको बंद कर दिया था | रेगिस्तान के तपती गर्मी में तीन दिन तक, हुसैन के खेमें में बच्चे साहित सभी के लिए पानी बंद कर दिया था और प्यास से तड़पते रहे [18] |

किस तारीख को कितना यज़ीद के सेना कर्बला आए थे उसका विवरण इस प्रकार है:

तारीख	सेना को कर्बला पहुंचना	प्रमुख कमांडर	स्थिति
2 मुहर्रम	1000	हूर इब्न यज़ीद	इमाम हुसैन के काफ़िला के साथ सेना भी कर्बला पहुँचा था	
3 मुहर्रम	लगभग 4000	उमर इब्न सअद	कूफ़ा से 4000 सैनिकों के साथ पहुँचे और मुख्य सैन्य कमान संभाली	
4 इसके बाद	अलग-अलग टुकड़ियाँ में	शिम्र, हुसैन इब्न नुमैर, यज़ीद इब्न रुकवा, आदि	इब्न ज़ियाद ने लगातार अतिरिक्त टुकड़ियाँ भेजी	कुछ स्रोत्र से 6 मुहर्रम तक लगभग 20000 बताते है	
7 मुहर्रम	मुख्य सेना + अतिरिक्त घुड़सवार	उमर इब्न सअद	फरात नदी का पानी इमाम हुसैन के खेमें तक पहुँचने से रोकने के लिए लगभग 500 घुड़सवार तैनात किए जाने का उल्लेख मिलता है	
9 मुहर्रम तासुआ	अतिरिक्त सेना	शिम्र इब्न दिल जौंशन प्रमुख रूप से	शिम्र लगभग 4000 सैनिको को साथ आने की प्रशिद्ध रिवायत है	उसी दिन इब्न ज़ियाद का कड़ा आदेश आया कि इमाम हुसैन से युद्ध / बैत के मामले को निर्णायक बनाया जाए	
10 मुहर्रम (आशूरा)	कुल संख्या के बारे में	मैदान का मुख्य कमांडर उमर इब्न सअद, शिम्र, आदि	युद्ध हुआ और इमाम व उनके अधिकांस साथियों की शहादत हुई	आधुनिक ऐतिहासिक सारांश अक्सर लगभग बताते है	

तालिका 19- कर्बला में यज़ीद के सेना आने की तारीख को दर्शाता है |

मुहर्रम के 10 तारीख के सुबह जिसे आशूरा का दिन कहते है | उस दिन जंग सुरु हुई | वास्तव में ये जंग नहीं था | एक तरफ 4000 की ट्रेंड फ़ौज थी और एक तरफ भूखे प्यासे लोग जिसमे औरत, बूढ़े, बच्चे सभी थे | लड़ाई का एक ही नतीजा हो सकती थी वो नरसंहार | तब हुसैन और उनके साथियों ने तय किया की सब एक-एक करके युद्ध में जायेगें और शहादत लेगे [23]|

ऐसा कहा जाता है की हुर्र इब्न यजीद अल-तमीमी ने यज़ीद का कमांडर था, जो इराक के सीमा से घेर कर कर्बला के मैदान में लाया था | वो आशूरा के दिन अपना पद त्याग कर हुसैन के खेमें में शामिल हो गया था; और सबसे पहले इन्होने ही युद्ध में गया था और अपना शहादत लिया था | ये हुसैन के 72 बफादार साथी और परिवार को छोड़कर था [23]| कर्बला में इमाम हुसैन का संवाद इस प्रकार है :

क्र०	समय	संवाद
1	मैदान-ए-जंग शुरू होने से पहले इमाम ने	ए लोगो! अपने जमीर को टटोलो	क्या मैं तुम्हारे नबी का

	यज़ीदी फ़ौज को झकझोरने के लिए फ़रमाया |	नवासा नहीं हूँ ? क्या मै अली और फातिमा का बेटा नहीं हूँ? अगर तुम दीन को नहीं मानते, तो कम से कम दुनिया में तो एक आज़ाद और गैरतमंद इंसान बनकर जियों !
2	आशूरा की रात जब इमाम हुसैन ने चिराग बुझाकर सबको जाने की इजाजत दी, तो हज़रत अब्बास तड़प उठे | उन्होंने अपनी बहन बीवी जैनब और भाई से कहा |	क्या हम आपको छोड़कर चले जाएं ताकि आपको बाद जिंदा रहें ? खुदा न करे कि हम वह दिन देखने के लिए जिंदा रहें | हमारी जान और औलाद आप पर कुर्बान है |
3	जब 6 महीने के बच्चे अली असगर प्यास से तड़प रहे थे, तो इमाम उन्हें मैदान में लाए और फ़ौज से कहा :	अगर तुम्हारी जंग मुझसे है, तो इस मासूम बच्चे का क्या कसूर है ? इसे थोड़ा पानी पिला दो | जवाब में हरमला ने बच्चे की गर्दन पर तीर मारा |
4	जब इमाम हुसैन तीर और तलवारों के जख्मों से चूर होकर सजदे में थे, तो उन्होंने बारगाहे-इलाही में अर्ज किया :	ऐ अल्लाह ! मैं तेरी रजा (मर्जी) पर राजी हूँ | तेरे फैसले के आगे सर झुकाता हूँ | तेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, ऐ बेसहारा लोगों के सहारे!

तालिका 20- इमाम हुसैन का संवाद कर्बला में \|

पहले से 72 + 01 = 73 लोग हो गया था \| लेकिन 72 बफादार साथी और परिवार में से सबसे पहले हुसैन के 18 साल के बेटे अली अकबर मैदान में उतरे और अपना शहादत लिया था \| ऐसा कहा जाता है की मोहम्मद पैगंबर के हमसकल थे \| अली अकबर बहादुरी से लड़े लेकिन अकेले इन्सान हजारो फ़ौज के सामने कैसे ठीक सकता था \| उसके बाद हुसैन के सौतेले भाई अब्बास के बारी आई तो उन्होंने खेमें में बच्चे प्यास से बेहाल थे ; तो उन्होंने पानी वाला मसक लेकर फरात नदी के तरफ गया और मसक में पानी भी भरा लेकिन लौटते वक्त उनके दोनों हाथ कलम कर दिया गया था \| उसके बाद उसने अपने दाँत से पकड़ कर लाने की कोशिस किया लेकिन एक तीर आया जो मसक पर लगा और सारा पानी वहीँ जमीन (रेत) पर बह गया था \| और वो भी वहीँ शहीद हो गए थे \| इसी प्रकार दोपहर तक हुसैन के लगभग साथी और परिवार शहीद हो गया था; जो लड़ने लायक था \| अंतिम में हुसैन अपने तलवार लेकर मैदान में उतरें और बहादुरी से लड़े; और जब जख्मी होकर जमीन पर गिरी तो शिमर इब्न दिल-जोशन आगे बढ़ा और उसने पैगंबर मोहम्मद के नवासे, अली और फातमा के बेटे; इमाम हुसैन का सर कलम कर दिया \| और इमाम हुसैन इस प्रकार अपना शहादत लिया \| उसके बाद यज़ीद के फ़ौज ने खेमें को लुटा और आग लगा दिया और हुसैन के बचे हुए परिवार को कैद कर लिया [20]\|

2 मुहर्रम से 11 मुहर्रम तक का समय इस प्रकार है:

क्र०	हिजरी तारीख	इंग्लिश तारीख	कर्बला में घटना
1	2 मुहर्रम, हिजरी 61	2 अक्टूबर 680	हुसैन का कर्बला पहुचना |
2	3 मुहर्रम, हिजरी 61	3 अक्टूबर 680	उमर बिन सअद की कमान में सेना कर्बला पहुँचीं |
3	4-6 मुहर्रम, हिजरी 61	4-6 अक्टूबर 680	दोनों पक्षों के बीच बातचीत / संपर्क जारी रहा और सैनिकों की संख्या बढती गई |
4	7 मुहर्रम, हिजरी 61	7 अक्टूबर 680	हुसैन के शिविर तक पानी की पहुँच रोक दी गई-यह घटना कर्बला की प्रचलित है |
5	8 मुहर्रम, हिजरी 61	8 अक्टूबर 680	घेराबंदी और कठिन परिस्थितियाँ जारी रही |
6	9 मुहर्रम – तासुआ, हिजरी 61	9 अक्टूबर 680	शिम्र कर्बला पहुँचा | उमर बिन सअद की सेना ने हमला करने की तैयारी की | हुसैन ने एक रात की मोहलत माँगी |
7	रात 9 – 10 मुहर्रम, हिजरी 61	9/10 अक्टूबर 680	हुसैन और उनके साथियों ने अंतिम रात इबादत में गुज़ारी |

8	10 मुहर्रम आशूरा, हिजरी 61	10 अक्टूबर 680	कर्बला की लड़ाई हुई और हुसैन बिन अली तथा उनके अधिकांश साथियों की शहादत हुई |
9	11 मुहर्रम, , हिजरी 61	11 अक्टूबर 680	हुसैन के परिवार और बचे हुए लोंग को कूफा की ओर ले जाया गया |

तालिका 21- कर्बला-ए-मैदान में पूरा घटना क्रम को दर्शाता है |

(8) कर्बला का युद्ध खत्म हो गया था | इमाम हुसैन और उसने साथियों के कटे हुए सिरों को कूफा ले जाया गया | इसके बाद यज़ीद के गवर्नर उबैदुल्ला इब्र जियाद ने हुसैन का सिर यज़ीद के पास लाया ; यज़ीद ने अपनी छड़ी से उनके होठ और दातों को कुरेत रहा था | तबी दरवार में बैठे, मोहम्मद पैगंबर के बूढ़े साथी भी मह्जुद थे, वो ये सब देख कर रो पड़े और चिल्लाकर बोले की ये छड़ी हटा ले | खुदा की कसम मैंने इन होठो को पैगंबर मोहम्मद को चुमते देखा है | जब आम लोग कैदियों के खिलाफ जुलुस; जब दमिश्क पंहुचा तो यज़ीद ने आने वाले खतरे का अंदाजा लगा लिया था | उसने लोगो को गुस्से को शांत करने के लिए सारा इल्जाम अपने गवर्नर, उबैदुल्ला इब्र ज़ियाद पर डाल दिया था | यज़ीद ने कहा वो तो सिर्फ हुसैन से शपथ लेना चाहता था , क़त्ल का इरादा था नहीं, डराना चाहता था | उसने हुसैन के परिवार को कुछ दिनों तक दमिश्क में रखा फिर इज्जत के साथ मदीना वापस भेज दिया | इतना होने के बाद अब यज़ीद को लगा की मामला को गया रफा-दफा | लेकिन ये उसकी सबसे बड़ी भूल थी [19] |

कर्बला का युद्ध ख़त्म होने के बाद का घटना इस प्रकार है :

क्र०	पड़ाव (स्थान)	तारीख (61हिजरी)	ऐतिहासिक महत्व और मुख्य घटनाएँ
1	कर्बला (इराक)	11 मुहर्रम	यज़ीदी सेनापति उमर इब्ने साद ने शहीदों के शवों को बे-गौर-ओं-कफ़न छोड़ दिया और महिलाओं व बच्चों को लोहे की जंजीरों में जकड़कर कूफ़ा की तरफ बिना कजावे के ऊँटों पर बिठाकर रवाना किया |
2	कूफ़ा (इराक)	12 मुहर्रम से 19 मुहर्रम	यहाँ गवर्नर इब्ने ज़ियाद ने अपने जीत का जश्न मनाने के लिए दरवार सजाया | लेकिन बीबी ज़ैनब और इमाम जैनुल आबेदीन ने ऐसा बेबाक भाषण दिया कि कूफ़ा के लोग रोने लगे और यज़ीदी हुकूमत के ख़िलाफ़ माहौल बनाने लगे |
3	कूफ़ा से शाम का सफ़र (इराक)	19 मुहर्रम से 30 मुहर्रम	यज़ीदी सेना कैदियों को मुख्य राजमार्गों के बजाय दूर-दराज़ के गांवों और पहाड़ी रास्तों से लेकर गई, ताकि विद्रोह न हो | कई जगहों पर जब लोगों को पता चला की ये पैगंबर मुहम्मद का परिवार है, तो उन्होंने सेना पर पथराव भी किया |
4	दमिश्क / शाम	1 सफ़र	काफिला यज़ीद की राजधानी दमिश्क पहुँचा | यज़ीद ने पुरे शहर को सजवाया था | कैदियों को कई घंटों तक तपती धुप में बाज़ारों में घुमाया गया |
5	यज़ीद का दरवार	सफ़र का महीना	यज़ीद के भरे दरवार में जान इमाम हुसैन का सर मुबारक लाया गया, तो बीवी जैनव ने यज़ीद को ललकारते हुए कहा था: यज़ीद! तू चाहे जितना साज़िशे कर ले, तू हमारा नाम इतिहास से कभी नहीं मिटा पाएगा | यहीं पर इमाम सैज्जाद ने भी अपना मशहूर उपदेश दिया, जिससे यज़ीद के महल में हडकंप मच गया |
6	जिंदा-ए-शाम (जेल)	लगभग 1 से चार 4 हफ़्ते	अहले-बैत को दमिश्क के एक अंधेरे और बिना छत वाले खंडहर (जेल) में इमाम हुसैन की 4 साल की मासूम बेटी बीबी सकीना का भूख प्यास और सदमे के कारण निधन हो गया |
7	रिहाई और कर्बला वापसी	8-10 सफ़र के बाद	दमिश्क में बढ़ते जन आक्रोश से डरकर यज़ीद ने अहले-बैत को रिहा करने और उन्हें वापस मदीना भेजने का हुक्म दिया | लेकिन अहले बैत

			ने पहले कर्बला जाने की इच्छा जताई |
8	अरबईन	20 सफ़र	कर्बला के युद्ध के ठीक 40 दिन बाद काफ़िला दोबारा कर्बला पहुँचा | यहाँ पहली बार आधिकारिक रूप से इमाम हुसैन का चेहलुम (शोक सभा) मनाया गया, जो आज दुनिया का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण जन-आंदोलन (अरबईन मार्च) बन चूका है |
9	मदीना	सफ़र के आखिर / रबी-उल-अव्वल	जब बीवी ज़ैनब और इमाम सैज्जाद मदीना पहुँचे, तो पुरे शहर में कोहराम मच गया | उन्होंने कर्बला के एक-एक ज़ुल्म की दास्तान लोगों को सुनाई, जिसने उम्ययद साम्राज्य के पतन की नींव राखी |

तालिका 22- इमाम हुसैन के बच्चे हुए परिवार का, कर्बला से मदीना तक का सफ़र को दर्शाता है \|

कर्बला में जो कुछ हुआ उसकी कहानी एक चिंगारी की तरह पूरी मुस्लिम जगत में फ़ैल गया और चिंगारी ने गुस्से की आग भड़का दिया \| इस आग, सबसे पहले मोहम्मद पैगंबर के शहर मदीना से निकली \| क्योंकि जब हुसैन का बचा हुआ परिवार जब मदीना पंहुचा तो यज़ीद के जीती-जागती कहानी बन गई \| उन्हें देख कर मदीना के लोग यज़ीद के हुकमत को मानने से साफ इंकार कर दिया \| और यज़ीद के लिए ये एक बड़ा समस्या उत्पन हो गया \| यज़ीद ने अपनी पूरी ताकत इस बगावत को कुचने में लगा दिया \|
बीवी जैनव का कुछ भाषण इस प्रकार है :

स्थान	बीवी जैनव का भाषण
जब कैदियों का काफिला कूफा पहुँचा, तो वहां के लोग तमाशा देख रहे थे और कुछ रो रहे थे | तभी बीवी जैनव ने लोगों को खामोश रहने का इशारा किया और अपने पिता हज़रत अली के लहजे में गरज कर कहा:	ये कूफ़ा वालों! ए धोखेबाजो और दगाबाजो| क्या तुम हमारे लिए रोते हो तुम्हारे आँसू कभी न सुखें | तुम्हारी मिसाल उस औरत जैसी है जो सूत काटने के बाद खुद ही उसे टुकड़ो में तोड़ देती है | तुमने इमाम हुसैन को ख़त लिखकर बुलाया और फिर उन्हीं का साथ छोड़ दिया | तुमने नबी के खून से अपने हाथ रंगें है | अब तुम किस मुँह से अल्लाह के सामने जाओगे?
दमिश्क में जब यज़ीद ने अपनी जीत के अहंकार में इमाम हुसैन के सर मुबारक का अपमान करने की कोशिश की, तब जंजीरों में जकड़ी होने के बावजूद बीवी जैनव ने भरे दरवार में यज़ीद को ललकारते हुए कहा |	ये यज़ीद! क्या तू समझाता है कि तूने हम पर जमीन और असमान के रास्ते बंद कर दिया हैं और हमें कैदियों की तरह दा-व-दर घुमाकर तूने कोई बड़ी इज्जत पा ली हैं? तू अपनी औकात भूल गया है | सुन! तू चाहे जितनी साजिशे कर ले, चाहे जितना कोशिश कर ले तू न तो हमारी याद (इतिहास) को मिटा पाएगा और नहीं हमारे पैगाम को दवा पाएगा | तेरा दौर (शासन) चंद दिनों का है और तेरी यह जमात बहुत जल्द बिखर जाएगी | उस दिन अल्लाह का न्याय होगा और जीत हमारी होगी |

तालिका 23- बीवी जैनव का भाषण को दर्शता है \|

इमाम हुसैन के बचे हुए परिवार को किस प्रकार जेल में सताया गया है, उसका विवरण इस प्रकार है:

क्र०	पहलू (घटना)	विवरण और ऐतिहासिक सच्चाई
1	जेल की स्थिति	यह जेल दमिश्क के उमय्यद महल के पास स्थित एक ऐसा पुराना खंडहर था, जिसकी छत नहीं थी | कैदी दिन की कड़कती धूप और रात की अत्यधिक ठंड सीधे झेलने पर मजबूर थे |
2	यज़ीद की साज़िस	इतिहासकारों के अनुसार, यज़ीद ने जानबूझकर उन्हें बिना छत के खंडहर में रखा ताकि गर्मी, सर्दी और दीवारों के गिरने से वे धीरे-धीरे दम तोड़ दें और किसी को शक भी न हो |
3	महिलाओं का पर्दा	बीवी जैनव और अन्य महिलाओं की चादरें पहले ही छीन ली गई थी | इस खुले खंडहर में वे अपने वालों और फटे हुए आस्तीनों से अपने चेहरों छुपाने की कोशिश करती थी |

4	इमाम सैज्जाद की बीमारी	कर्बला में बीमार चल रहे चौथे इमाम, हज़रत जैनुल आवेदीन को भारी लोहे की जंजीरों (बेड़ियों) में जकड़कर इसी जेल में रखा था, जिससे उनके पैरों से खून बहता था |
5	बीवी सकीना	इमाम हुसैन की सबसे लाडली बेटी बीवी सकीना को इस जेल में सबसे ज्यादा तकलीफ उठानी पड़ी | वह हर वक्त अपने पिता बाबा जान की याद करके रोती थी |
6	सर मुबारक	एक रात बीवी सकीना ने सपने में अपने पिता को देख और रोते हुए जाग गई | उनका रोना सुनकर यज़ीद ने क्रूरता की हद पार करते हुए हुसैन का कटा हुआ सर थाली में रखकर जेल भिजवा दिया |
7	सबसे बड़ा सदमा (सहादत)	जब 4 साल की बच्ची ने थाल से कपड़ा हटाकर अपने पिता का कहू-लुहान सर देखा, तो वह उससे लिपट गई | उन्होंने अपने पिता के सूखे होठों को चूमा, अपनी दास्तान सुनाई और उसी सदमे में दम तोड़ दिया |
8	जेल में पहली अज़ादारी	बीवी सकीना की मौत के बाद, बीवी जैनव ने जेल के अंदर ही इमाम का पहला अधिकारिक मातम (शोक सभा) आयोजित किया | जेल की दीवारों से रोने की आवाज सुनकर दमिश्क की स्थानीय महिलाएं भी वहाँ इकठ्ठा होने लगी थी |

तालिका 24- जेल की स्थिति में क्रूरता को दर्शता है \|

यज़ीद ने 12000 सीरियाई फ़ौज देकर मदीना भेज दिया और हुकम दिया की अगर मदीना के लोग तीन दिन में सरेंडर (आत्मसमर्पण) नहीं करे तो , शहर पर हलमा करना और तीन दिन के लिए अपने फ़ौज को जायज कर देना \| जायज का मतलब है की फ़ौज जो चाहे कर सकता है : लुट सकता है , कत्ले आम कर सकता है , रेप कर सकता है, कुछ भी कर सकता है [23]\|

मदीना के लोग लड़ने का फैसला लिया \| शहर के बाद हर्रा के मैदान में एक भयानक जंग हुई और मदीना के लोग बहादुरी से लड़े \| लेकिन यज़ीद के ट्रेंड फ़ौज के सामने कैसे टिक सकता था \| हजारो लोग मारे गए, फिर यज़ीद के फ़ौज ने वो किया, जो इस्लिमिक इतिहास के सबसे काले पन्ने में याद किया जाता है \| फ़ौज शहर में घुसी और तीन तीन तक पैगंबर मोहम्मद के शहर को लुटा गया \| ये कर्बला के बाद यज़ीद का दूसरा बड़ा गुनाह था \| हर्रा की घटना, 683 ई में हुआ था \| लगभग 27-28 अगस्त 683 ईस्वी में [23]\|

मदीना को कुचलने के बाद, यज़ीद के फ़ौज मक्का की तरफ बढ़ी; वहां अब्दुल्लाह इब्र जुबेर ने बगावत कर रखी थी \| ये सल्लाज बनाने को लेकर हुसैन के पक्ष में था \| सीरियाई फ़ौज ने मक्का के चारो तरफ घेरा और पहाड़ो पर कैटल बंम लगाया था और इस्लाम के सबसे पवित्र शहर पर पत्थर बरसाया \| ये यज़ीद का तीसरा सबसे बड़ा गुनाह माना गया था \| और घेरा बंदी के दौरान कावा में आग लगी और भारी नुकसान पहुँचा \| जब मक्का के घेरा बंदी चल रही थी, तभी दमिश्क से एक खबर आई 683 ईस्वी के नवम्बर माह में की यज़ीद की मौत हो गई \| ऐसा माना जाता है की उस समय यज़ीद के उम्र लगभग 35 से 40 के बीच था \| कमांडर ने मक्का के घेरा बंदी उठा ली और सीरियाई फ़ौज वापस लौट गई \| यह घेराबंदी सितंबर से नवंबर 683 ईस्वी के बीच हुई, जब उमय्यद सेना ने अब्दुल्ला इब्न अल-जुबैर के खिलाफ मक्का को घेरा था। इसी दौरान काबा को आग से काफी नुकसान पहुंचा था [23]।

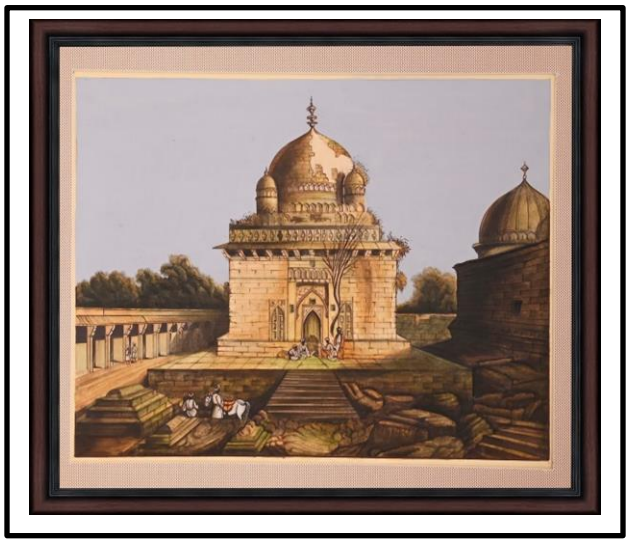
यज़ीद को तीन तरह से याद किया जाता है \| इतिहासकारो के नज़र में वो एक नाकाम बादशाह था \| सुन्नियों के नज़र में वो एक बड़ा गुनेहगार खलीफा था \| और सियाओ के नज़र में जुल्म का वो चेहरा जिससे कभी माफ़ नहीं किया जा सकता है \|

04. कर्बला का घटना मुहर्रम पर्व के रूप में विस्तार:

भारत में ताज़िया का इतिहास में, बादशाह तैमुर लंग का गहरा रिश्ता है \| तैमुर लंग बादशाह के समय ही ताज़िया का सुरुआत हुई थी \| जिसका ताल्लुक शिया संप्रदाय से था \| तैमुर लंग हर साल (वर्ष) मुहर्रम माह में इराक के शहर

कर्बला में जाता था और इमाम हुसैन के मज़ार पर फुल-माला चढ़ा कर (पाठ) प्रार्थना करते थे और अपने लिए दुवा मांगते थे | जब तैमुर लंग बहुत अधिक बीमारी से ग्रसित और बुजुर्ग हो गया था | तो हकीम ने उसे चलने-फिरने से मना कर दिया था | उसके बाद उस साल मुहर्रम का महीना आ गया था; तो उनको इमाम हुसैन के माज़र पर जाना था | लेकिन नहीं जा पाए थे | क्योंकि हकीम ने चलने से मना किया था | इस कारण से तैमुरलंग बादशाह और उदास पड़ गया था [21] |

एक दिन दरवारियो ने सोचा कि तैमुरलंग बादशाह को कैसे खुश किया जाय | तैमुर लंग को खुश करने के लिए बास के कमाची से इमाम हुसैन का मकबरा (कब्र) बनाया और उसको फुल-माला से सजाया गया | और जब मज़ार पर फुल चढाने का समय आया तो दरवारियों ने तैमुर लंग से बोला की हुसैन का मकबरा (कब्र) बनकर तैयार है | आप चाहे तो फुल माला अर्पण कर सकते है | उस साल के बाद कुछ स्थानों पर और भी इमाम हुसैन की मकबरा (कब्र) के आकृति बनाकर याद किया जाने लगा; जो मुहर्रम माह में कर्बला में होता था | कुछ समय बाद ये हुसैन के मकबरा बनाने के रूप ताज़िया के रूप ले लिया; जिसमे मकबरे का आकार का थोड़ा सा, तोड़-जोड़ किया गया था | अभी भी बहुत से लोग मकबरें के सेम आकृति का बनाता है, क्योकि कर्बला की गहरी जानकारी रखता है |



चित्र 01– इमाम हुसैन का पुराने कब्र का चित्र है |



चित्र 02 – ये ताज़िया अनारपुर गांव के आशूरा का है |

पहला ताज़िया 801 हिजरी (1398 ईस्वी) में तैमूर के दरबारियों ने बांस और रंगीन कपड़ों से बनाया था | "तैमूर के ताज़िया की धूम बहुत जल्द पूरे देश में मच गई।", और तब से यह अनूठी परंपरा मुख्य रूप से भारतीय उपमहाद्वीप (भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और आसपास के क्षेत्रों) में मनाई जाने लगी।

चीन पर आक्रमण करने के रास्ते में ओत्रार (कजाकिस्तान) नामक स्थान पर ठंड लगने और बीमारी के कारण उसकी मौत हो गई। उसका मकबरा उज्बेकिस्तान के समरकंद स्थित गुर-ए-अमीर में है। तैमूर का वंशज जहिर उद-दिन मुहम्मद बाबर था, जिसने आगे चलकर भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की।

तैमूर लंग एक क्रूर तुर्क-मंगोल विजेता और तैमूरिद साम्राज्य का संस्थापक था, जिसका जन्म 8 अप्रैल 1336 को उज्बेकिस्तान के शाहरिसब्ज में हुआ था। बचपन में एक चोट के कारण उसका पैर खराब हो गया था, इसलिए उसे 'तैमूर-ए-लंग' (लंगड़ा तैमूर) कहा जाता था। उसने 1398 में भारत पर हमला किया और दिल्ली में भयानक कत्लेआम व लूटपाट मचाई। 18 फरवरी 1405 को उसकी मृत्यु हो गई थी |

तैमुर बरला वंश का तुर्की योधा था और विश्व विजय उसका सपना था | सन 1336 को समरकंद के नजदीक केश गांव ट्रांस आक्सनिया (अब उज्बेकिस्तान) में जन्मे तैमुर को चंगेज खां के पुत्र चुगताई ने प्रशिक्षण दिया | सिर्फ 13 वर्ष के उम्र में ही वह चुगताई तुर्की का सरदार बन गया |

फारस, अफगानिस्तान, मेसोपोटामिया और रूस को जीतते हुए तैमुर भारत 1398 पंहुचा | उसके साथ 98000 सैनिक भी भारत आए | दिल्ली में मेहमूद तुगलक से युद्ध कर अपना ठिकाना बनाया था और यहीं उसने सवयं को सम्राट घोषित किया |

तैमूर लंग के भारत पर आक्रमण 1398 में आया था तब से मुहर्रम का ताज़िया का सुरुआत हुआ था | इतिहास और लोक मान्यताओं के अनुसार, भारत और आस-पास के क्षेत्रों में ताज़िया निकालने की परंपरा की शुरुआत तैमूर लंग ने ही की थी [22]।

05. शोध पद्धति:

इस शोध में मुहर्रम के धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पक्षों का अध्ययन करने के लिए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया। प्राथमिक स्रोतों में स्थानीय समुदाय के सदस्यों, धार्मिक विद्वानों, इमामों तथा मुहर्रम से जुड़े आयोजकों से साक्षात्कार और अनौपचारिक बातचीत को शामिल किया गया। साथ ही, मुहर्रम के अवसर पर आयोजित जुलूस, मजलिस, ताज़िया एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया। द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत इतिहास एवं धर्म से संबंधित पुस्तकों, शोध-पत्रों, पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों, सरकारी अभिलेखों तथा विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों का अध्ययन किया गया। प्राप्त सूचनाओं का विषयगत वर्गीकरण कर मुहर्रम की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, धार्मिक महत्व, सामाजिक सहभागिता, सांस्कृतिक परंपराओं तथा समकालीन परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया। शोध में विभिन्न स्रोतों से प्राप्त तथ्यों का तुलनात्मक परीक्षण किया गया, ताकि निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय और वस्तुनिष्ठ हो सकें। अध्ययन में प्रतिभागियों की पहचान एवं व्यक्तिगत सूचनाओं की गोपनीयता का भी ध्यान रखा गया। इस प्रकार, शोध पद्धति का उद्देश्य मुहर्रम के बहुआयामी स्वरूप को तथ्यात्मक और संतुलित दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना है।

समस्या :
मुहर्रम पर्व के शोक (याद) के बारे में सही जानकारी साझा करने लिए अध्ययन करना |

उद्देश्य:
(1) मुहर्रम का शोक (याद) क्या है |
(2) मुहरम पर्व या शोक (याद) का सुरुआत कैसे हुआ था |
(3) मुहर्रम पर्व या शोक मानाने का मुख्य कारण क्या है |
(4) मुहर्रम पर्व या शोक कौन-कौन से देश में मनाया जाता है |
(5) इमाम हुसैन को कर्बला के मैदान में क्यों शहीद किया गया था |

परिकल्पना :

(1) जो लोग मुहर्रम मना रहे है उसके लिए सही जानकारी साझा करना | ताकि अंधकार में नहीं रहे |
(2) जालिमों को पूर्ण रूप से विरोद्ध करना |
(3) मुहर्रम त्यौहार में सत्य और इंसानियत का परिचय देना |

(4) हुसैन का शोक इस तरह मनाया जाय की उस दिन किसी भी प्रकार का दंगा-फसाद नहीं हो |
(5) इन्सान को सही रास्ते या सत्य के रास्ते पर चलने के लिए उत्साहित करना |

शोध अन्तराल :

शायद मुहर्रम मानाने का ऐतिहासिक और रीती-रिवाज पर एक साथ किसी ने अध्ययन नहीं किया है |

नया वर्क :

इस अध्ययन में मुहर्रम के रीती-रिवाज पर एक ढाचा दिया गया है |

डाटा संग्रहण :

पहला: द्वितीयक स्रोत से डाटा प्राप्त किया गया है | रिसर्च आर्टिकल, गूगल स्कॉलर, विकिपीडिया, गूगल, किताब, यूट्यूब, इत्यादि ।

दूसरा: प्राथमिक स्रोत से डाटा प्राप्त किया गया है | जिसमे साक्षात्कार लिया गया है | जिसमे गैरसंभाव्यता - नमूनाकरण (Non-probability sampling) का यूज़ किया गया है | Convenience Sampling (सुविधाजनक नमूनाकरण (एक गैर) प्रायिकता-Non-Probability) नमूना चयन पद्धति है, जिसमें शोधकर्ता उन प्रतिभागियों का चयन करता है जो आसानी से उपलब्ध और शोध के लिए इच्छुक होते हैं। इस पद्धति में समय, संसाधन और लागत की बचत होती है। मुहर्रम से संबंधित शोध में स्थानीय लोगों, धार्मिक विद्वानों, आयोजकों या जुलूस में शामिल प्रतिभागियों से आसानी से उपलब्धता के आधार पर जानकारी एकत्र की जा सकती है ; इस नमूना के साथ साथ निर्णयात्मक नमूनाकरण एक गैर प्रायिकता नमूना चयन पद्धति-को भी ध्यान में रखा गया है | इस साक्षात्कार में , कोटानमूना पद्धति का उपयोग नहीं किया है |

सर्वे रिपोर्ट:
शोध कार्य का भौगोलिक क्षेत्र जिला नवादा, बिहार की राजधानी पटना से 141 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है | नवादा जिला में 14 प्रखंड है | शोध के लिए एक प्रखंड नारदीगंज में ; पंचायत इचुआ-करना के एक गांव अनारपुर को चयन किया गया है | इस गांव में 6 ताज़िया बनाया जाता है | और सभी ताजिया को इमामबाडा पर रखने का जगह बनाया गया है | जिसमे तीन ताज़िया हिन्दू समुदाय से रहता है और तीन ताज़िया मुसलिम समुदाय से रहता है | इस गाँव में जो भी जाति के लोग रहते है वो सभी मुहर्रम के गति-विधि (क्रियाकलाप) में भाग लेते है | किसी प्रकार का कोई भेद-भाव नहीं होता है |

Person	Age
85	35<=55
64	56<=80

Person	Experience
94	18<=30
55	31<=60

Person	Religion

90	मुस्लिम
59	हिन्दू

तालिका 25- डाटा प्रदर्शित

06. बिहार के नवादा जिले के अनारपुर गाँव में मुहर्रम मनाने के क्रिया-कलाप का वर्णन:

नवादा जिले के नारदीगंज प्रखंड में स्थित अनारपुर गाँव अपनी सामाजिक एकता, आपसी भाईचारे और सांस्कृतिक परंपराओं के लिए जाना जाता है। मुहर्रम के अवसर पर गाँव में इमाम हुसैन की शहादत को श्रद्धापूर्वक याद किया जाता है। ताज़िया, जुलूस और पारंपरिक कार्यक्रमों के माध्यम से लोग इस ऐतिहासिक घटना से जुड़े त्याग, सत्य और इंसानियत के संदेश को स्मरण करते हैं। मुहर्रम के आयोजन में गाँव के लोगों की सहभागिता सामाजिक सौहार्द की भावना को मजबूत करती है। बुजुर्गों के मार्गदर्शन में युवा पीढ़ी भी इन परंपराओं से जुड़ती है। अनारपुर गाँव में मुहर्रम का पर्व आपसी सम्मान, भाईचारे और मिल-जुलकर रहने की ग्रामीण संस्कृति का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस गांव के बीच में इमामबाडा है | यहीं से गांव में चरों तरफ जाने का रास्ता है | ये अनारपुर गाँव का खूबसूरती है की इमामबाडा बीच गाँव में है |

इमामबाड़ा: यह शब्द अरबी और फारसी भाषा के मेल से बना है | इमाम: एक अरबी भाषा है, जिसका अर्थ शिया इस्लाम में धार्मिक नेता या पैगंबर मोहम्मद के वंशज से है, मतलब की इमाम हुसैन से है | बाड़ा: यह फारसी / भारतीय मूल का शब्द है, जिसका अर्थ दरवार, स्थान, घर (आंगन या प्रांगन) होता है | इमामबाडा केवल शिया समुदाय के लिए नहीं होता है | मुहर्रम में यहाँ दो धर्म और कुछ जाति के लोग इमाम हुसैन के प्रति अपनी शोक (याद) प्रकट करते है |

मुहर्रम के क्रिया कलाप के दिन पानी और शर्बत के विशेष सबील लगाए जाते है, जो कर्बला में इमाम हुसैन और उनके परिवार की प्यास की याद दिलाते है |
मुहर्रम के भीतर कई धार्मिक और ऐतिहासिक प्रतीख रखे जाते है , जिन्हें मुहर्रम में बहुत सम्मान दिया जाता है:
अलम: यह कर्बला के युद्ध के परचम (ध्वज) का प्रतीक है, जिसे हजरत अब्बास ने उठाया था | हज़रत अब्बास, इमाम हुसैन के सौतेले भाई और कर्बला के युद्ध में उनके लश्कर के कमांडर व ध्वजवाहक (अलमदार) थे
ताज़िया: इमाम हुसैन के रौजे या मकबरे का एक सुन्दर ढाचा या मॉडल | इसे मुहर्रम के 09वे दिन के रात में और आशूरा के जुलूस में निकला जाता है |
तुर्वत- ये बड़े ताजिया में रखे जाते है, जिसमे पगड़ी और सेहला (सेहरा) बंधा जाता है |
मदीना: ये शायद पैगंबर मोहम्मद के शहर के नाम पर रखा गया होगा | इसकी पुष्टि नहीं की जा सकती है |
कर्बला : उस समय कर्बला-ए-मैदान एक बहुत बड़ा रेगिस्तान था | कर्बला-ए-मैदान के सटे एक नदी था | मतलब कर्बला बसावट से बहुत दूर था | अनारपुर गाँव में भी कर्बला बसावट से बहुत दूर है और कर्बला से सटे नदी भी है |

मुहर्रम का पर्व लगभग दस दिनों का होता है उसके क्रिया-कलाप निम्न प्रकार है :

क्र. सं.	क्रियाकलाप	विवरणी
1	चाँद रात	इस रात को इमामबाड़ा के साफ-सफाई किया जाता है और इमामबाड़ा के पास अगरबती और मोमबती जलाकर शुरुआत किया जाता है	और डंका भी बजाने का भी परंपरा है	
	मुहर्रम 1 से मुहर्रम 4 तक	इमामबाड़ा के पास अगरबती या मोमबती जलाकर याद किया जाता है और युद्ध क्षेत्र के याद में लाठी/ तलवार/ गडासा / भाला, इत्यादि खेलने के लिए डंका बजाय जाता है	क्योकि हुसैन का सभी साथी (10 मुहर्रम 61 हिजरी) 10 अक्टूबर 680 ईस्वी को कर्बला

2		के युद्ध में एक-एक कर युद्ध में लड़ने गया था और अपना शहादत लिया था	मुहर्रम का अखाड़ा इसी युद्ध का प्रतीक माना जाता है	
3	मुहर्रम 5	ऐसा मानना है कि, इस रात को दरगाह से मिट्टी लाकर इमामबाड़ा पर रखने का परंपरा है	और अगरबती या मोमबती जलाया जाता है और युद्ध क्षेत्र के याद में लाठी/ तलवार/ गडासा/ भाला, इत्यादि खेलने के लिए डंका बजाय जाता है	और लगभग 11 बजे रात में दरगाह से मिट्टी लाया जाता है	और इमामबाडा पर रखा जाता है	
4	मुहर्रम 6	इस रात को आतर (छठा) का दिन मान कर कार्य आगे बढ़ाया जाता है और इमामबाड़ा के पास अगरबती और मोमबती जलाकर सुरुआत किया जाता है	आतर का मतलब युद्ध से संबंधित है	जैसे अगर युद्ध चल रहा है तो किसी दिन युद्ध नहीं करना है तो उसके लिए डंका बजाय जाता था ; और उस दिन युद्ध रुक जाता था	शायद उसी को आतर कहा जाता था	ऐसा माना जाता है	

तालिका 26- अनारपुर गाँव के मुहर्रम का क्रियाकलाप को दर्शाता है |

मुहर्रम का कुछ खास दिन:

मुहर्रम 7 का दिन: इस दिन इमामबाड़ा पर करीब 2 बजे दोपहर को निशाना (झंडा) लगाया जाता है और इससे पहले गाँव में 2.5 (ढाई) फेरा घुमाया जाता है; उसके बाद 4 से 5 निशाना इमामबाडा पर खड़ा किया जाता है, और एक निशाना कर्बला में खड़ा किया जाता है | और सलामी के लिए मुर्गा को ज़बाह किया जाता है, उसे सलामी मुर्गा कहा जाता है | और लगभग चार बजे शाम को इमामबाड़ा के पास पैकार को बुलाया जाता है | और सभी पैकार एक परात में निम्न सामग्री के साथ आता है : बधिया (बधिया दो रंग का होता है और रस्सी जैसा लपटा हुआ होता है), और मोर का बना हुआ मुरक्षल होता है, माला होता है, मिठाई होता (जिसको रेवड़ी बोला जाता है), अगरबती और माचिस होता है | उसके बाद नेयाज़ (फ़ातिहा) करके, पैकार को बधीया बंधा जाता है | नेयाज़ (फ़ातिहा) के बाद सभी पैकर 50 रूपये के हिसाब से मौलवी (मोज़ाबर) को देने का परंपरा है | इसका फोटो इस प्रकार है:



चित्र 03– ये 7 मुहर्रम के अनारपुर गाँव का है; जो पैकार को दर्शाता है |

मौलबी के द्वारा 'शहादत नामा पुस्तक' पढ़ कर अपने इमामबाडा के चारो ओर (तरफ) पैकार को घुमाया जाता है | शहादत नामा का कुछ पंक्ति निचे इस प्रकार दिया गया है | उसके बाद अन्य इमामबाड़ा घूमने के लिए छोड़ दिया जाता है | ऐसा कहा जाता है कि प्रतिदिन कम से कम पांच इमामबाडा घूमने कि सलाह दी जाती है |

ऐसा कहा जाता है की सप्तमी को जो पैकार लगता है उसका तालुकात संदेशवाहक (बरैद) से मिलता है; यानि की जो खबर को अदान प्रदान करता था | जब सप्तमी तारीख को कर्बला में इमाम हुसैन के खेमें के लिए फरात नदी का पानी बंद कर दिया था; तो इमाम हुसैन ने अपने खबर को पहुचाने के लिए इसी पहनावें (पोशाक) में भेजा था | इसलिए इसका रस्म जुड़ा हुआ है | जो खबर पहुचता था उस इंसान का पहचान यही होता था : घुंघरू बंधने का परंपरा इस लिए किया था कि जब रात में सफ़र करता था तो घुंघरू के आवाज से सभी जीव-जन्तु रस्ते से हट जाता था | और उसके साथ एक लाठी भी रहता था | और बधिया भी बंधा जाता था | इसका पुष्टि नहीं किया जा सकता है |

S.N	शाहदत नामा	हिंदी अर्थ
1	बिस्मिल्लाह हिर रहमान निर रहीम	"अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपा करने वाला है।
2	बज्मे जहां में धूम है मातम हुसैन का	यह दुनिया रूपी महफ़िल; इमाम हुसैन के शोक और गम का माहौल है।
3	यारो ये गम फिजा है शहादत हुसैन की	गम से भरा हुआ वातावरण या हवा ; इमाम हुसैन की शहादत
4	क्या समझे कोई मोमिनो रुतबा हुसैन का	"हे ईमान वालों ; इमाम हुसैन के ऊंचे मकाम को कोई आम इंसान पूरी तरह नहीं समझ सकता।"
5	फरमाते हर घडी थे यह महबूबे किब्रिया	अल्लाह के सबसे प्रिय पैगंबर हर समय यही बात कहा करते थे।"
6	लखते-जिगर हसन-हुसैन मेरे नूरे ऐन है	हसन और हुसैन मेरे लिए बहुत प्यारे और प्रिय हैं, जैसे आँखों की रोशनी।
7	है निस्फतन-ए-हसन मेरा, बाक़ी हुसैन है	"मेरा संबंध (जुड़ाव) इमाम हसन से है, और मेरा बाकी का सब कुछ इमाम हुसैन का है।"
8	सुनते थे कोई बच्चे के रोने की जब सदा	जब भी इमाम हुसैन के खेमे किसी छोटे बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई देती थी
9	बेचैन हो के कहते थे सालारे अंबिया	जो कर्बला में इमाम हुसैन और उनके परिजनों की शहादत के मंज़र को देखकर गहरे दुःख को दर्शाता है।
10	चिल्ला के रो रहा है कोई तिफले नाज़नीन	कोई बेहद मासूम और नाजुक बच्चा प्यास की शिद्दत और तकलीफ से तड़पकर ज़ोर-ज़ोर से रो रहा है।
11	लों साहिबों ख़बर के हुसैना न हो कही	ऐ लोगों! सुनो और ध्यान दो, यह दुःखद ख़बर जान लो कि अब इमाम हुसैन इस दुनिया में नहीं है	
12	रातों को उठ जोश में महबूबे किर्दीगार	अल्लाह के प्रिय रातों को उठकर पूरे जोश, श्रद्धा और गहरी इबादत में लीन हो जाते थे।"
13	फिरते थे गिर्द खानाए ज़हरा के बार बार	इमाम हुसैन के परिवार के लोग बार-बार हज़रत फ़ातिमा ज़हरा के ख़ेमा के चारों ओर चक्कर काट रहे थे।
14	आवाज सुनते थे जो नवासों के रोने की	हुसैन रोने की आवाज़ भी बर्दाश्त नहीं कर पाते थे और उसे सुनकर बेचैन हो जाते थे.
15	फ़रमाते थे पुकार के ज़हरा से यू नबी	नबी अपनी बेटी हज़रत ज़हरा फ़ातिमा को पुकार कर यह फ़रमा रहे थे
16	(बेदार) बेज़ार हो के नींद से रोता है ज़ार ज़ार	वह (दुख या परेशानी के कारण) अपनी नींद से इतना परेशान और उदास हो चुका है कि अब नींद में ही फूट-फूट कर रोता

		है।
17	समझाव जल्द ता के मेरे दिल को हो करार	अत्यधिक दुख की स्थिति में दिल के सुकून, सब्र और कर्बला के संदेश को गहराई से समझने की व्याकुलता
18	महबूबे किब्रया ने जो पूछा हुसैन को	नाना जान ने अपनी रूहानी मौजूदगी में अपने प्यारे नवासे (पोते) इमाम हुसैन को पुकारा और उनका हाल पूछा।
19	हस कर कहा के जोड़ा हमारा तो सुर्ख हो	शहीद होने या कर्बला के मैदान में खून से लहूलुहान होने की प्रसन्नता व्यक्त करना।
20	हुल्ले निकाले पानी से जिस वक्त मुस्तफ़ा	इमाम हुसैन और उनके साथियों पर ढाए गए जुल्म व पानी की पाबंदी को बयान करना है।
21	एक जोड़ा सुर्ख दुसरे का रंग सब्ज था	इमाम हुसैन द्वारा अपनी शहादत और खून से लाल होने वाले लिबास कफ़नको हंसते-हंसते स्वीकार करना
22	जब दोनों शहजादों को जोड़ो पहना चुके	जब कर्बला के दो युवा राजकुमारों को अंतिम विदाई (कफ़न) दे दी गई
23	आँखों से जिब्रईल के आसूँ रवाँ हुए	हज़रत इमाम हुसैन की शहादत और उनके परिवार पर हुए अत्याचारों को देखकर अल्लाह के सबसे मुख्य फरिश्ते हज़रत जिब्रईल भी अपने आँसू नहीं रोक पाए और रो पड़े।

तालिका 27- मुहर्रम का शहादत नामा पुस्तक का कुछ पंक्ति को दर्शाता है |

और इस रात को फुल कि चौकी निकालाने का परम्परा माना जाता है; इसके साथ-साथ केले के पत्ते काटने का भी परंपरा है | और रात में इमामबाड़ा के नजदीक अगरबती या मोमबती जलाया जाता है | और युद्ध क्षेत्र के याद में लाठी/ तलवार/ गडासा/ भाला इत्यादि खेलने के लिए डंका बजाय जाता है | इसके कुछ समय बाद गांव के अंदर चारो तरफ अखाड़ा में ले जाया जाता है | और वहाँ भी लाठी खेला जाता है |

8 मुहर्रम के रात: इस रात को मदीना निकालने की परंपरा है, जिसमे एक तुर्वत रहता है, और उस मदीनों को रात में; गाँव के सभी अखाड़े में ले जाया जाता है; और वहां युद्ध क्षेत्र के याद में लाठी/ तलवार/ गडासा/ भाला, इत्यादि खेलने के लिए डंका भी बजाय जाता है | और सुबह होने के समय इमामबाड़ा पर बैठा (रख) दिया जाता है | इसके 5 या 6 घंटे बाद गाँव के अंदर चारो तरफ अखाड़ा में ले जाया जाता है | और वहाँ भी लाठी खेला जाता है | उसके बाद अनारपुर के टोला (पांचू बिगहा) से सेड़ीया खाड़ नामक स्थान पर छोटा ताज़िया (मदीना) का मिलन किया जाता है | और वहाँ भी लाठी खेला जाता है |

9 मुहर्रम के रात: इस रात को बड़ा ताज़िया निकालने का परंपरा है ; इस ताज़िया में दो तुर्वत रहता है | और युद्ध क्षेत्र के याद में लाठी/ तलवार/ गडासा खेलने के लिए डंका बजाय जाता है | इस रात को बड़की गमाड़ा के रूप में भी जाना जाता है | इसके कुछ समय बाद गाँव के अंदर चारो तरफ अखाड़ा में ले जाया जाता है | और वहाँ भी लाठी खेला जाता है | सुबह करीब लगभग 4 बजे ताज़िया को इमामबाडा के पास; कंधे पर रख कर इमामबाडा के चारों ओर (तरफ) घुमाते हुए मर्सिया पढा जाता है | करीब आधे से एक घंटे मर्सिया पढ़ कर इमामबाडा पर रखा जाता है | जिसका कुछ पंक्ति निम्न प्रकार है:

S.N	मर्सिया	हिंदी अर्थ
1	रो-रो कहती थी बाली सकीना ; जालिमो मेरे गौहर न छीनो | - 02	बाल्यावस्था में बाल सकीना रो-रो कर ज़ालिमों से कहती थीं कि ऐ अत्याचारियों! मेरे कानों के गहने मत छीनो।
2	मै हूँ बीनते इमामे मदीना ; जालिमो मेरे गौहर न छीनो | - 02	"मैं मदीना के इमाम (हज़रत इमाम हुसैन) की बेटी हूँ; ऐ ज़ालिमों, मेरे कान के मोती (झुमके) मत छीनो।"
3	मै तो लखते दिले मुस्तुफा हूँ ; जिगर गौ सहे मुर्तुजा हूँ | - 02	मैं हजरत मुहम्मद मुस्तफा के दिल का टुकड़ा हूँ ; उनके मार्ग का पालन करने वाला हूँ।

4	गौहरे गौ से खैरुन निसा हूँ ; जालिमो मेरे गौहर न छीनो | - 02	मैं सीधे-सरल स्वभाव की उत्तम महिला हूँ; ऐ अत्याचारियों! मुझसे मेरा मेरा सम्मान, मेरी संतान या मेरी अनमोल चीज़ मत छीनो।"
5	बेपदर को न इतना सताओं ; खून कानो से न इतना बहाओं | - 02	जो पहले से ही अनाथ, बेसहारा या कमजोर है, उसे और अधिक परेशान या प्रताड़ित मत करो ; उस पर इतने खौफनाक या गहरे जुल्म मत ढाओ कि उसके कानों से खून बहने लगे।
6	दुःख जगा को न दिल को दुखाओ ; ज़ालीमों मेरे गौहर न छीनो | - 02	संसार को दुःख मत दो और किसी के दिल को मत दुखाओ। हे लोगों, मुझसे मिलो और मेरे अनमोल रत्न मुझसे मत छीनो।
7	----- या हुसैन ----------या हुसैन ------ या हुसैन ---------- या हुसैन --------३०	
8	रो-रो कहती थी बाली सकीना ; जालिमो मेरे गौहर न छीनो | - 02	क्र० सं०- 1 का अर्थ
9	मै हूँ बीनते इमामे मदीना ; जालिमो मेरे गौहर न छीनो | - 02	क्र० सं०- 1 का अर्थ
10	इज्जत बहरे खुदा (ब-हरे-ख़ुदा) दो ; बेतामी ठेकाने लगा दो | - 02	अल्लाह के वास्ते सम्मान दो; और जो लोग बदतमीज़ी या अशिष्टता कर रहे हैं, उन्हें उनकी सही औकात दिखा दो (या उन्हें सीधा कर दो)।
11	तेग मेरे गले पर फिरा दो ; ज़ालिमो मेरे गौहर न छीनो | - 02	भले ही मेरे गले पर तलवार चला दो; लेकिन ऐ अत्याचारियों, मुझसे मेरा यह अनमोल मोती (मेरा बच्चा) मत छीनो।"
12	गम को बाबा को मुझमे नहीं हाल ; मार डालो अभी मुझको फ़िलहाल | - 02	मेरे अंदर अब गम (दुःख) और तकलीफों को बर्दाश्त करने की बिल्कुल भी हिम्मत या क्षमता नहीं बची है| इससे बेहतर तो यही होगा कि मुझे अभी इसी वक्त मार डालो (यानी मेरी जान ले लो), ताकि मुझे इस रोज़-रोज़ के तड़पने और दर्द से छुटकारा मिल सके।
13	कर दो लाशा ज़े-फ़ौजों से पामाल; ज़ालिमों मेरे गौहर न छीनो। | - 02	"भले ही मेरे मृत शरीर को अपनी फ़ौजों और घोड़ों के पैरों तले कुचलवा (रौंदवा) दो, लेकिन ऐ अत्याचारियों! मुझसे मेरे इस मासूम बच्चे (मोती जैसे अनमोल गौहर) को मत छीनो।"
14	"बाज आओ अब जौर-ओ-जफ़ा से, डर हश्र के मुस्तफ़ा से"| - 02	अत्याचार और अन्याय करना बंद करो, और कयामत (न्याय के दिन) के दिन पैगंबर मुहम्मद साहब के सामने होने वाली जवाबदेही से डरो।
15	वक़्तवाऊँगी तुमको खुदा से ; ज़ालिमो मेरे गौहर न छीनो | - 02	मैं भगवान (खुदा) से तुम्हारी शिकायत करूँगी; ऐ अत्याचारियों (ज़ालिमों), मुझसे मेरे बहुमूल्य रत्न (गौहर) मत छीनो।
16	----- या हुसैन ----------या हुसैन ------ या हुसैन ---------- या हुसैन --------३०	
17	बिना ताह पर मै पली हूँ ; सहर्वानो की मै लडली हूँ | - 02	मेरा पालन-पोषण बिना किसी कष्ट, परेशानी या डांट-फटकार के हुआ है और मैं शहरबानो की बहुत लाडली (प्रिय) हूँ।
18	लोग पहने बरादर खड़ा है ; जालिमो मेरे गौहर	एक तरफ मेरा भाई (या परिवार का रक्षक) ज़ख्मी और

	न छीनो	- 02	बेबस हालत में खड़ा है (या शहीद हो चुका है), और दूसरी तरफ तुम ज़ालिम लोग मुझ अनाथ/बेबस से मेरे बच्चे या मेरी बची-कुची अमानत (गौहर) भी छीन रहे हो।
19	मै यकीने शह-ए-कर्बला हूँ ; और मासूम हूँ बेखता हूँ	- 02	मैं कर्बला के शहंशाह (इमाम हुसैन) पर अटूट विश्वास रखने वाला हूँ; और मैं पूरी तरह से बेगुनाह, निष्पाप और निर्दोष हूँ (मुझ पर किया जा रहा ज़ुल्म पूरी तरह नाजायज़ है)।
20	मै यदा से यदा हूँ तो यदा हूँ ; जालिमो मेरे गौहर न छीनो	- 02	मैं जैसा भी हूँ, जो कुछ भी हूँ, अपने आप में पूर्ण (मग्न) हूँ; ऐ ज़ालिमों! मुझसे मेरी इस सादगी, अनमोल सच्चाई या ईश्वर भक्ति के रत्न (गौहर) को मत छीनो।
21	अगर करूगी खोदा से मै फरियाद : गम में हो जाओगे देखो बर्वाद	- 02	अगर मैं ई खुदा से तुम्हारे अन्याय या धोखे की शिकायत (फरियाद) करूँगी, तो तुम बर्बादी और गहरे दु:खों (गम) में डूब जाओगे।
22	इतनी मुझ पर न करो बेदाद ; ज़ालिमो मेरे गौहर न छीनो	- 02	"मुझ पर इतना अत्याचार (या जुल्म) मत करो; ऐ ज़ालिमों! मुझसे मेरा कीमती मोती (या मेरी अनमोल धरोहर) मत छीनो।
13	----- या हुसैन ----------या हुसैन ------ या हुसैन ---------- या हुसैन --------३०		
24	बी सदा लासा सहने न दा ; मेरी मेहनत न बर्वाद कर आ	- 02	किसी को अपनी मेहनत का फल दिलाने, नुकसान से बचाने या अपने प्रयासों को सफल बनाने की भावुक अपील करने के लिए कहा जाता है।
25	रा-ब-राहूँ कहूँ अल्लाह-अल्लाह : ज़ालिमो मेरे गौहर न छीनो	- 02	"मैं सीधे और सच्चे रास्ते पर चलते हुए हर सांस में अल्लाह-अल्लाह का नाम जप रहा हूँ। हे अत्याचारियों! मुझ पर जुल्म मत करो और मुझसे मेरी सबसे कीमती पूंजी (मेरा ईमान, मेरा आत्मसम्मान या मेरा सब कुछ) मत छीनो।"
26	----- या हुसैन ----------या हुसैन ------ या हुसैन ---------- या हुसैन --------३०		
27	शुक्र हक़ कर के ख़ामोश रहना; ज़ब्त-ए-दिल कर के ख़ामोश रहना	- 02	इंसान को हर हाल में ईश्वर का सच्चा शुक्रिया अदा करते हुए शांत रहना चाहिए और अपने दिल पर काबू रखकर सब्र (धैर्य) के साथ मौन रहना चाहिए।
28	हमको तड़पना है तेरा कहना ; ज़ालिमो मेरे गौहर न छीनो	- 02	तुम्हारा कहना है कि हमें तड़पना ही है; हे ज़ालिमों, (कम से कम) मेरे अनमोल मोती (गौहर) तो मत छीनो।
29	जुल्म अगर करे तो तुम दुआ दो; नारे दोजख सें उम्मत बचा दो	- 02	कोई आप पर अत्याचार या अन्याय भी करता है, तो आप बदले में उसे बद्दुआ देने के बजाय उसके लिए भलाई और हिदायत की दुआ करते हैं। आप जहन्नम की उस भयानक आग को ठंडा करके या धोकर अपनी उम्मत को नरक के अज़ाब से बचा लीजिए।
30	ये जहरे वारे बेटी सदा दो ; ज़ालिमो मेरे गौहर न छीनो	- 02	यह एक माँ की अत्यंत भावुक पुकार है जो ज़ालिमों से मिन्नत कर रहे हैं कि वे उनके मासूम और प्यारे बच्चे को उनसे न जुदा करें, और साथ ही अपनी लाडली बेटी को आवाज़ देने के लिए कह रहे हैं।

31	रो-रो कहती थी बाली सकीना ; ज़ालिमो मेरे गौहर न छीनो | - 02	क्र० सं०- ०१ का अर्थ
32	बानो कहती हुई रन में आई ; मेरे बच्चा का लासा बता दो | - 02	बीबी बानो इमाम हुसैन की पत्नी, अपने पुत्र के शव का पता पूछती हुई युद्ध-क्षेत्र में विलाप करते हुए आई|
33	तुमको रौजे है नबी की दोहाई ; मेरे बच्चा का लासा बता दो | - 02	तुम्हें अल्लाह के पैगंबर के मज़ार दरगाह की कसम है; मुझे मेरे बच्चे की लाश का पता बता दो।
34	ढूढने की नहीं मुझमे ताकत ; मेरी आँखों की कम है बसारत | - 02	मुझमें ढूँढने की शक्ति नहीं है, क्योंकि मेरी आँखों की देखने की क्षमता बहुत कमजोर हो चुकी है।
35	हो गई है मेरी गैर हालत ; मेरे कच्चा का लासा बता दो | - 02	मेरी स्थिति बहुत ज़्यादा बिगड़ चुकी है | मेरे इस मासूम बच्चे की बेजान होते शरीर को बताओ |
36	----- या हुसैन ----------या हुसैन ------ या हुसैन ---------- या हुसैन --------३०	
37	जैय नव ने दरे खेमस यु सोर मचाया ; फरियाद खुदाया | - 02	जिस समय हज़रत ज़ैनब ने कर्बला के खेमों में दर्द और दुःख से कोहराम मचाया और रोते हुए खुदा से फरियाद की।"
38	परदेस में भाई से मुकद्दर ने छोड़ाया ; फरियाद खुदाया | - 02	हे अल्लाह! मेरी किस्मत ने मुझे मेरे अपने भाई से दूर करके इस अनजान परदेस में लाकर पटक दिया है। हे भगवान, मैं आपसे यही गुहार लगाता हूँ
39	लव तुम्हे क़त्ल किसने किया नहर के उपर ; मजलूम बरादर – 02	हे मेरे मजलूम भाई! फ़ुरात नदी के किनारे तुम्हें किसने शहीद कर दिया?" (अब्बास के दो बेटो को फरात नदी में क़त्ल कर फेक दिया था)
40	अफ़सोस लइनो को जरा रह में न आया ; फरियाद खुदाया | - 02	बड़ा दुख है कि वह रास्ते में भी मुझसे नहीं मिला। हे भगवान! मेरी इस दर्दभरी पुकार को सुनिए।
41	भैया तेरे मुज्लिम की कहना ये वारी ; है आस्क के वारी	हे भाई! आपका यह गुनहगार आपके सामने रोते हुए और खुद को आप पर न्योछावर करते हुए अपनी बात कह रहा है।
42	जो बीस पहर पानी का कतरा भी नही पाया : फरियाद खुदाया | - 02	"जिसने 24 घंटे (आठ पहर) तक पानी की एक बूंद भी नहीं पाई, हे अल्लाह! मैं तुझसे उसी के वास्ते और उसी की बेबसी की फ़रियाद करता हूँ।
43	मैं बेकस-ओ-नाचार नवासी हूँ नबी की ; बेटी हूँ अली की | - 02 (मैं बेकसों की ग़मख़्वार हूँ, नवासी हूँ नबी की, बेटी हूँ अली की)	मैं लाचारों, बेसहारों और ग़रीबों की मददगार हूँ, मैं पैगंबर हज़रत मुहम्मद की नातिन हूँ, और हज़रत अली की बेटी हूँ।
44	दर-दर मुझे बेहरमों सर नंगे फिराया; फरियाद खुदाया-02	हर एक के दरवाज़े पर, निर्दयी लोग, बिना दुपट्टे के, घूमता रहा, अल्लाह मैं तुझसे न्याय की गुहार लगाता हूँ |
45	----- या हुसैन ----------या हुसैन ------ या हुसैन ---------- या हुसैन --------३०	
46	असगर ने की जल्द ये वारी : बाबा गई मरी | - 02	मासूम अली असगर द्वारा प्यास के मारे तड़पने और बहुत कम उम्र में ही शहीद हो जाने पर परिवार के विलाप
47	पानी के एवज तीर लइनो ने लगाया ; फरियाद खुदाया | - 02	"हे खुदा! मैं आपसे न्याय की गुहार लगाता हूँ (फरियाद करता हूँ) कि जब मैंने उनसे पानी माँगा, तो उन्होंने मुझे पानी देने के बदले में तीर मार दिया।"

48	----------अकबर में दर आई ; है आस्क के बारी	- 02	अकबर (या जो बहुत शक्तिशाली/बड़ा है) के भीतर भी अब डर या दरार आ गई है; अब देखिए इसके बाद किसकी बारी आती है।"
49	नक्सा तेरे महबूब का दुनिया से मिटाया ; फरियाद खुदाया	- 02	"हे अल्लाह! ज़ालिमों ने इस दुनिया से तेरे सबसे प्यारे (महबूब) के वजूद और उनकी पावन निशानी को बेरहमी से मिटा दिया है। उनका पूरा परिवार और वो खुद शहीद कर दिए गए हैं। हे खुदा, इस घोर अन्याय और ज़ुल्म के खिलाफ हमारी आत्मा तुझसे न्याय की भीख मांगती है, हम तेरे दर पर रो-रोकर फरियाद करते हैं।
50	पामाल किया लास को घोड़ो से सारा सर ; है कुदरत दावर		"शहीद के पवित्र शव को घोड़ों के टापों से पूरी तरह (सिर से पैर तक) रौंदकर क्षत-विक्षत कर दिया गया; यह सब उस सच्चे न्याय करने वाले अल्लाह की ही मर्जी या लीला है।
51	सर काट के नेज़े पे लईनों ने चढ़ाया, फरियाद खुदाया - 02		अत्याचारियों और पापियों ने सिर काटकर उसे भाले की नोक पर ऊँचा चढ़ा दिया; हे खुदा! इस ज़ुल्म के खिलाफ आपके दरबार में हमारी फरियाद है।
52	----- या हुसैन ----------या हुसैन ------ या हुसैन ---------- या हुसैन --------३०		

तालिका 28- मुहर्रम में गए जाने वाले मर्सिहा का कुछ पंक्ति को दर्शाता है |

उसके बाद इमाम हसन के याद में जहर का प्याला का रस्म होता था | हज़रत हसन इब्न अली की शहादत 670 ईस्वी के आस-पास मदीना में हुई थी। ऐतिहासिक और धार्मिक स्रोतों में व्यापक रूप से यह उल्लेख मिलता है कि उनकी शहादत जहर दिए जाने से हुई थी। कई इस्लामी परंपराओं में उनकी पत्नी जादा बिन्त अल-अशअस पर जहर देने का आरोप लगाया गया था और कुछ स्रोत इसके पीछे मुआविया की भूमिका का दावा करते हैं। हालांकि, इन दावों की ऐतिहासिक पुष्टि को लेकर मतभेद हैं और सभी स्रोत एक जैसी जानकारी नहीं देते। इसलिए जहर दिए जाने की परंपरा और इससे जुड़े आरोपों को अलग-अलग समझना आवश्यक है।

10 मुहर्रम का दिन: इस दिन को गांव के अंदर लगभग 10 बजे दिन में चारो तरफ अखाड़ा में ताज़िया ले जाया जाता है | उसके बाद गाँव के बाहर स्कूल और दरगाह से होते हुए पांचू बिगहा गाँव (अनारपुर के बिगहा) से ताज़िया का मिलन सेड़ीया-खाड़ नामक स्थान पर किया जाता है | वहाँ से मिलन होने के बाद अपने गाँव के आहार पर रखा जाता है | उसके बाद डीहूरी टाड़ नामक स्थान पर लगभग 4 से 5 गाँव से ताज़िया का मिलन होता है | वहां भी अखाड़ा में लाठी खेला जाता है | उसके बाद वहाँ से अपने गाँव के इमामबाड़ा पर रखा जाता है | कुछ समय बाद लगभग 7 बजे के करीब, गाँव के अंदर चारों तरफ 2.5 (ढाई) फेरें घुमाते हुए कर्बला ले जाया जाता है | तब इमाम हुसैन को लगभग 10 बजे रात के लगभग कर्बला में दफनाया जाता है | क्योंकि कर्बला नामक मैदान में इमाम हुसैन का मूल कब्र है, जहा युद्ध में अपना शहादत लिया था | और उसी समय सभी पैकार को भी छोड़ाया जाता है | अब जहाँ-जहाँ मुहर्रम मनाया जाता है, वहाँ -वहाँ कर्बला नाम के मैदान बनाया जाता है | अनारपुर गाँव के 10 मुहर्रम के ताज़िया का कुछ चित्र इस प्रकार है, जो गाँव से बाहर ले जाने के क्रम में; रास्ते का है :



चित्र 04– ये ताज़िया अनारपुर गाँव के आशूरा दिन का है; सेड़ीया-खाड़ ले जाने के क्रम में स्कूल पे पास |



चित्र 05– ये ताज़िया अनारपुर गांव के आशूरा दिन का है: सेड़ीया-खाड़ मैदान में |



चित्र 06– ये ताज़िया अनारपुर गांव के आशूरा दिन का है; डीहूरी टाड़ ताज़िया ले जाने के क्रम में रास्ते में |

संशोधन का प्रस्ताव: (अनारपुर गाँव का बात है; अन्यथा में न ले)
शोध साक्षत्कार के दौरान कुछ ज्ञानी लोग का कहना है, की ये जो रस्म चल रहा था; इसमें जानकारी के अभाव में मुहर्रम मानाने का कुछ रस्म गलत माना जा सकता है (संभावनाएं) | लेकिन पहले जिस प्रकार से मनाते आ रहे है, उसमे बदलाव करना थोड़ा दिक्कत भी है | बहुत से लोग नहीं मानेगें | कुछ लोग ये भी कहेंगें की जो पहले से मनाते आ रहे है, वो लोग नहीं जानते थे ? हमारा उद्देश्य किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं, बल्कि रस्म को प्रमाणित तरीके से समझना और अमल करना होना चाहिए। मुहर्रम की असली सीख इंसाफ, सब्र, त्याग और सच्चाई पर कायम रहना है।

(1) पंचमी तारीख को; जो दरगाह से मिट्टी लाकर इमामबाडा पर रखने का जो परंपरा है, उसमे भी संशोधन की आवश्यकता हो सकता है | इससे इमाम हुसैन को मान-सम्मान में ठेस पहुँच सकता है | हमलोग इमाम हुसैन को जंग-जीत के रूप में याद करते है | इस्लाम में मूर्ति पूजा सख्त मनाही है ; इस आधार पर इमाम हुसैन के लिए जो मिट्टी लाया जाता है, वो एक प्रकार का मूर्ति हो जाता है | उस मिट्टी को मुठी जैसा बनाकर उसमे थोड़ा-थोड़ा सा चाप कर इमाम हुसैन का सब चीज बनाया जाता है | जो इस्लाम के नियम के विरुद्ध जो जाता होगा | संभवत उसमे कुछ नहीं रखा जा सकता है | सिर्फ फुल-माला जिसको सेहरा (सेहला) बोलते है वो रखा जा सकता है |

(2) मुहर्रम 7 तारीख को; जो सलामी मुर्गा के रूप में ज़बाह किया जाता है, वो संभवत ठीक नहीं है | क्योकि कर्बला में मेन रूप से इमाम हुसैन और उनके के परिवार और उनके साथी का खून बहा था | और यज़ीद के सैनिक उस खून के पैर तले युद्ध लड़ रहा था | इस दिन मुर्गा देने का जो रस्म है, वो क्या दर्शाता है ? इसी दिन जो पैकार लगता है उस समय रेवड़ी का कोई तर्क संभवत नहीं होता है ; (संभावनाएं) |

(3) मुहर्रम 8 तारीख को; जो मदीना या चौकी पर तुर्वत बनाने का जो परंपरा है, उसमे भी संशोधन की आवश्यकता हो सकता है | तुर्वत बनाने का जो परंपरा है वो क्या है? किसका तुर्वत है? क्योकि कर्बला का युद्ध तो केवल एक दिन हुआ था, वो दिन था मुहर्रम दसमी का था | कहने का मतलब है की दसमी के हमलोग आशूरा मानते है ; तो फिर अष्टमी को मदीना में तुर्वत रखने का क्या दर्शता है ?

(4) मुहर्रम 9 तारीख को; ताज़िया में, जो 02 तुर्वत रखने का परंपरा है, उसमे भी संसोधन की आवश्यकता हो सकता है | सबसे पहले तुर्वत तो बनाया नहीं जा सकता है | मुहर्रम में हुसैन को याद किया जाता है | इसलिए एक तुर्वत की आवश्यकता हो सकता है | लेकिन दो तुर्वत क्यों रखते है?

(5) दसमी तारीख को सुबह में जों जहर के प्याला पीने का परंपरा है | इसका मतलन इमाम हसन से है | क्योकि हसन को उनकी पत्नी के द्वारा जहर पानी में डाल कर पिलाया गया था | किसी साजिस के तहत | इमाम हसन का शहादत कर्बला के युद्ध से लगभग 9 साल पहले हो गया था |

(6) मुहर्रम 10 तारीख को रैनी मुर्गा दिया जाता है | ये वही बात है जो मुहर्रम 7 तारीख के लिए सुझाव है | और दूसरा ताज़िया एक गांव से दुसरे गांव से मिलाते है; वो तो ठीक है | लेकिन मैदान में दौड़कर मिलना ठीक नहीं हो सकता है |

07. चेहल्लुम–चालीसवाँ:

चेहल्लुम, जिसे चालीसवाँ भी कहा जाता है, मुस्लिम समुदाय, विशेषकर शिया-सुन्नी मुसलमानों के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक अवसर है। यहाँ प्रत्येक वर्ष इस्लामी कैलेंडर के सफ़र महीने की 20 तारीख को मनाया जाता है। चेहल्लुम का संबंध कर्बला की उस महान घटना से है, जिसमें हज़रत इमाम हुसैन और उनके साथियों ने अन्याय और अत्याचार के सामने झुकने के बजाय सत्य, न्याय और मानवता के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया था।

चेहल्लुम केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि त्याग, न्याय, सत्य और मानवीय गरिमा जैसे मूल्यों को सामाजिक चेतना में जीवित रखने वाली परंपरा भी है। ऐतिहासिक दृष्टि से चेहल्लुम का संबंध 10 मुहर्रम, 61 हिजरी (680 ई.) की कर्बला की घटना से है, जब इमाम हुसैन और उनके साथियों ने यज़ीद की सत्ता के विरुद्ध अपने सिद्धांतों और नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए बलिदान दिया था। चालीसवें दिन होने वाला स्मरण इस त्रासदी को सामूहिक धार्मिक स्मृति का हिस्सा बनाता है। इस अवसर पर मजलिस, मातम, ज़िक्र, नौहा और धार्मिक प्रवचन आयोजित किए जाते हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से कर्बला की कथा और उससे जुड़े नैतिक संदेश नई पीढ़ियों तक पहुँचते हैं | 04 अगस्त 2026 को चेहल्लुम था |

अग्रेजी में -2026	हिजरी में- 1448
16.06.2026 को चाँद था |	जिस दिन मुहर्रम का चाँद होता है, उस दिन का गिनती नहीं होता है |
26.06.2026 को मुहर्रम दसमी था |	10 मुहर्रम 1448 हिजरी का दसमी था |
26.06.2026 से गिनती होता है चेहल्लुम के लिए |	मुहर्रम माह- 10 से 29 तारीख तक | 20 दिन हुआ |
जून माह में - 26, 27, 28, 29, 30. (कुल 05 दिन) |	सफ़र माह- 01 से 20 तारीख तक | 20 दिन हुआ |
जुलाई माह में- 01 तारीख से 31 तारीख तक (कुल 31 दिन)|	कुल = 20+20. कुल 40 दिन हुआ |
अगस्त माह में- 01 तारीख से 04 तारीख तक (कुल 04 दिन)|	अगर मुहर्रम माह 29 दिन का हुआ तो?
कुल जोड़= 05+31+04, कुल=40 दिन |	क्या सफ़र माह में एक दिन बढेगा? (नहीं)
अग्रेजी में -2025	हिजरी में- 1447
26.06.2025 को चाँद था |	चाँद रात का गिनती नहीं होता है |
06.07.2025 को मुहर्रम दसमी था |	10 मुहर्रम 1447 हिजरी का दसमी था |
15.08.2025 को चेहल्लुम	मुहर्रम माह 30 का था | इस माह में 20 दिन |
07 जुलाई से 15 अगस्त तक कुल 40 दिन हुआ |	सफ़र माह में 20 दिन
जुलाई- 07 से 31, =25 दिन, अगस्त- 01 से 15, =15 दिन	20+20
कुल= 25+15, = 40 दिन|	कुल= 40 दिन

तालिका 29– चेहल्लुम; मुहर्रम के किस दिन से जोड़ा जाता हैं वो दिखाया गया है |

प्रत्येक साल मुहर्रम, 10 से 11 दिन पीछे हटता है | निचे दी गई सारणी से समझा जा सकता है | इस्लामिक कैलेंडर (हिजरी) चंद्रमा की गति पर आधारित होता है**,** जबकि हमारा सामान्य कैलेंडर (ग्रेगोरियन) सूर्य की गति पर आधारित होता है। यह सूर्य पर आधारित है। इसमें एक साल 365 या 366 दिन का होता है। यह चंद्रमा की कलाओं पर आधारित है। इसमें एक साल में 354 या 355 दिन होते हैं। दोनों कैलेंडरों के बीच हर साल 10 से 11 दिनों का अंतर आ जाता है।

क्र०	साल	मुहर्रम का चाँद	मुहर्रम का पहला दिन	मुहर्रम का दसमी	चेहल्लुम–चालीसवाँ	अंतर (कितना दिन पीछे जाता है)
1	2016	02.10.2016	03.10.2016	12.10.2016	20.11.2016	--
2	2017	21.09.2017	22.09.2017	01.10.2017	10.11.2017	10
3	2018	11.09.2018	12.09.2018	21.09.2018	30.10.2018	11
4	2019	31.08.2019	01.09.2019	10.09.2019	19.10.2019	11
5	2020	20.08.2020	21.08.2020	30.08.2020	08.10.2020	11
6	2021	09.08.2021	10.08.2021	19.08.2021	28.09.2021	10
7	2022	29.07.2022	30.07.2022	09.08.2022	17.09.2022	11

8	2023	19.07.2023	20.07.2023	29.07.2023	06.09.2023	11
9	2024	07.07.2024	08.07.2024	17.07.2024	25.08.2024	10
10	2025	26.06.2025	27.06.2025	06.07.2025	15.08.2025	10
11	2026	16.06.2026	17.06.2026	26.06.2026	04.08.2026	11

तालिका 30- इसमें ये दिखाया गया है की एक साल में 10 या 11 दिन पीछे कैसे हटता है |

08. परिणाम:

इमाम हुसैन को युद्ध में शहदत हुई थी, और ज़ालिमो अत्याचारों की जीत हुई थी | इसके बाद ज़ालिमों ने शत्ता पर शासन सुरु किया | इसके बाद बहुत अत्याचार हुआ : पहला अत्याचार कर्बला का नरसंहार हुआ ; उसके बाद दूसरा अत्याचार कूफा के लोगो पर हुआ ; और तीसरा अत्याचार मदीना के लोगो पर हुआ | और मदीना पर अत्याचार के समय ही यज़ीद के बीमारी से मृत्यु हो गया था | उसके बाद सत्ता परिवर्तन हुआ | हमलोग इमाम हुसैन की शहादत को मुहर्रम के रूप में याद करते है |

	अली इब्ने अबी तालिब	हुसैन	हसन	राजा मुआविया	याजीद	हुसैन के याद में शोक	तैमुर लंग	ताजिया का सुरुआत
जन्म	13 रज्जब	3 शाबान 4 हिजरी	(15 रमज़ान हिजरी 3)	597 या 605	25 या 26 हिजरी	हुसैन जिस साल सहीद हुआ था, उसके अगले साल से, कर्बला में हुसैन के माजर पर शोक मनाया जाता है	25 शाबान 736 हिजरी	सितंबर 1398 में तैमूर ने सिंधु नदी पार की और रास्ते में आने वाले नगरों को रौंद दिया। दिसंबर 1398 में तैमूर की सेना दिल्ली के समीप पहुँची, और शासन किया	इसी साल से ताजिया का बनाने का सुरुआत भारत में हुआ था	
	(600 ईस्वी)	(11 जनवरी 626 ईस्वी)	1 दिसम्बर 624 ई	इस्लाम से पूर्व	645 ईस्वी से 647 ईस्वी		9 अप्रैल 1336 ईस्वी	
स्थान	पवित्र काबा (मक्का)	मदीना	मदीना, हिजाज़	मक्का शहर	सीरिया		उज्बेकिस्तान	
शासन	656-661	...	661-661 (6 माह के लिए) (40-41 हिजरी)	661 ईसवी से 680 ईसवी तक	680 ईस्वी से नवंबर 683 ईस्वी		...	
	चौथा खलीफा	...	पाँचवें	छठे खलीफा (पहला)	सातवा		...	
स्थान	मदीना – कूफा	...	...	दमिश्क	दमिश्क		...	
उम्र	61 साल	54 से 56 वर्ष	उम्र 45 वर्ष	75 से 83	36 से 38 वर्ष		68 वर्ष	
मृत्यु	28 जनवरी 661 ईस्वी	10 मुहर्रम 61 हिजरी (10 अक्टूबर 680 ईस्वी)	1 अप्रैल 670 (28 सफ़र हि 50)	अप्रैल 680 ईस्वी (22 रजब, 60 हिजरी)	11 नवंबर 683 ईस्वी (14 रबी उल-अव्वल, 64 हिजरी)		18 फरवरी 1405 (चीन पर आक्रमण के समय)	
स्थान	कूफा मस्जिद	कर्बला (इराक) के मैदान में	मदीना	सीरिया	सीरिया के 'हुव्वारिन		ओत्रार	

तालिका 31- मुहर्रम के ताज़िया का प्रचलन की सुरुआत को दर्शाता है |

S.N	1448 हिजरी (इस्लामिक)	2026-2027 (अंग्रेजी)	61 हिजरी (इस्लामिक)	680-681 ईस्वी अंग्रेजी
1	मुहर्रम (01-30)	(16 June 2026) – (15 July)	मुहर्रम (01-30)	(1-30) – October 680
2	सफ़र (01-29)	(16 July) – (13 Aug)	सफ़र (01-29)	(31 Oct) - (28 Nov)
3	रबीउल अव्वल (01-30)	(14 Aug) – (12 Sep)	रबीउल अव्वल (01-30)	(29 Nov) - (28 Dec)
4	रबी अल-थानी (01-29)	(13 Sep) – (11 Oct)	रबी अल-थानी(01-29)	(29 Dec) - (26 Jan 681)
5	जुमादा अल-अव्वल (01-30)	(12 Oct) – (10 Nov)	जुमादा अल-अव्वल (01-30)	(27 Jan) - (26 Feb)
6	जुमादा अल-थानी (01-29)	(11 Nov) – (09 Dec)	जुमादा अल-थानी (01-29)	(27Feb*) - (26 Mar)
7	रजब (01-30)	(10 Dec) – (08 Jan 2027)	रजब (01-30)	(27 Mar) - (26 Apr)
8	शाबान (01-29)	(09 Jan) – (07 Feb)	शाबान (01-29)	(27Apr) – (24 May)
9	रमज़ान (01-30)	(08 Feb) – (10 Mar)	रमज़ान (01-30)	(25 May) - (23 Jun)

10	शव्वाल (01-29)	(10 Mar) – (07 Apr)	शव्वाल (01-29)	(24 Jun) - (22 Jul)
11	जू अल-क़ादाह (01-30)	(08 Apr) – (07 May)	धू अल-क़ादाह (01-30)	(23 Jun) - (21 Aug)
12	जू अल-हिज्जा (01-29)	(08 May) – (05Jun)	धू अल-हिज्जा (01-29)	(22 Aug) - (19 Aug)

तालिका 32- मुहर्रम के घटना के समय को दर्शाता है और दोनों तारीख को तुलना को दर्शाता है |

अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि मुहर्रम केवल एक धार्मिक अवसर नहीं, बल्कि ऐतिहासिक स्मृति, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण माध्यम है। कर्बला की घटना तथा इमाम हुसैन के बलिदान ने सत्य, न्याय, त्याग और अन्याय के प्रतिरोध जैसे मूल्यों को धार्मिक एवं सामाजिक जीवन में विशेष स्थान प्रदान किया है। मुहर्रम के दौरान आयोजित मजलिस, जुलूस, ताज़िया, नौहा और अन्य धार्मिक गतिविधियाँ सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देती हैं तथा नई पीढ़ी को ऐतिहासिक और नैतिक मूल्यों से परिचित कराती हैं। अध्ययन से यह भी सामने आता है कि भारतीय समाज में मुहर्रम की परंपराएँ विविध सांस्कृतिक रूपों में विकसित हुई हैं। अतः मुहर्रम धार्मिक आस्था के साथ सामाजिक एकता और मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति का भी महत्वपूर्ण माध्यम है।

09. विमर्श:-

मुहर्रम से जुड़ी कर्बला की घटना ने मुस्लिम समाज की सामूहिक स्मृति को गहराई से प्रभावित किया है। इमाम हुसैन और उनके साथियों का बलिदान सत्य, न्याय, नैतिकता और अन्याय के विरोध का प्रतीक माना जाता है। इसलिए मुहर्रम का अध्ययन धार्मिक इतिहास के साथ-साथ समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

मुहर्रम को लोग इसलिए भी याद करते है की इस्लाम को सही तरीके से रक्षा करने के लिए किसी ढोंगी शासक को समर्थन नहीं करना चाहिए, चाहे उसी समय जान क्यों न चली जाय | और अन्याय करने वालो को मनोबल में टूट हो | और अन्याय के खिलाफ लड़ने वालो को मनोबल उच्च हो | लेकिन आज-कल या अभी के समय में ऐसा नहीं है | लोग डर से तत्काल कुछ नही कर पाते है |

मुहर्रम के अवसर पर आयोजित मजलिस, मातम, नौहा, जुलूस और ताज़िया जैसी परंपराएँ कर्बला की स्मृति को जीवंत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन धार्मिक गतिविधियों के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ऐतिहासिक घटनाओं और उनसे जुड़े नैतिक मूल्यों का संचार होता है। भारतीय संदर्भ में मुहर्रम की परंपराओं ने स्थानीय सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन पर भी प्रभाव डाला है। विभिन्न क्षेत्रों में इसके आयोजन के स्वरूप में विविधता दिखाई देती है, जो भारतीय समाज की बहुलतावादी प्रकृति को दर्शाती है।

एक सुझाव ये है की कोई भी दिलचस्प इन्सान एक ऐसा ऑनलाइन साईट बनाये जिसमे: मुहर्रम, कर्बला, इमाम हुसैन और कर्बला से संबंधित सभी शोध पत्र, किताब, विडियो, इमेज इत्यादि | सभी एक साईट पर; लिंक और पीडीफ उपलब्ध हो | ताकि इस से संबंधित शोध करने में ; सभी शोधार्थी को आसानी से डाटा मिल सके |

10. निष्कर्ष:-

भारतीय समाज के संदर्भ में मुहर्रम की परंपराओं ने धार्मिक सीमाओं से आगे बढ़कर सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को भी प्रभावित किया है। विभिन्न क्षेत्रों में ताज़िया, जुलूस, मजलिस, नौहा और अन्य धार्मिक गतिविधियों के माध्यम से कर्बला की स्मृति को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित किया जाता है। इन आयोजनों में सामुदायिक सहभागिता, सहयोग और मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति दिखाई देती है।

इमाम हज़रत हुसैन को कर्बला की युद्ध में 680 ई० में शहादत हुआ था | इमाम हुसैन एक सच्चा ईमानदार इंसान था; और अल्लाह से डरने वाला इंसान था; और इस्लाम को मानने वाला था | वो सभी इंसान को एक समान देखना चाहता था | हुसैन के अनुसार कोई भी इंसान किसी दुसरे इंसान पर अत्याचार करते हुए नहीं देखना चाहता था | कर्बला की युद्ध में हुसैन के साथ जो भी, साथी था; वो सभी अपना शहादत लिया | इसके बाद हुसैन भी युद्ध में गया और अपना शहादत लिया था | इमाम हुसैन एक अच्छा इंसान था इसलिए आज भी उनके मकबरे (कब्र) यादगार दशर्नीय है, और सभी जगह याद किये जाते है | यज़ीद एक ज़ालिम शासक था इसलिए उसकी कब्र का कोई यादगार और दशर्नीय नहीं है | हुसैन हारकर भी जीत गया था और यज़ीद जीतकर भी हार गया था |

चेहल्लुम–चालीसवाँ को केवल शोक की धार्मिक अभिव्यक्ति के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। यह ऐतिहासिक स्मृति, नैतिक प्रतिरोध और सामुदायिक पहचान का महत्वपूर्ण माध्यम है। कर्बला की स्मृति के माध्यम से यह परंपरा सत्य, न्याय और त्याग जैसे सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को पुनः स्थापित करती है।

मुहर्रम का अध्ययन केवल धार्मिक इतिहास के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवतावादी परिप्रेक्ष्य से भी महत्वपूर्ण है। यह पर्व वर्तमान समाज को सत्य, न्याय, सहिष्णुता और नैतिक साहस जैसे मूल्यों पर चिंतन करने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

(1) https://en.wikipedia.org/wiki/Husayn_ibn_Ali

---

(2) कासरवी, ए. 1944. शिगारी। तेहरान: पेमैन.

(3) अयूब, एम. 1987. "आशूरा।" संपादक ई. यारशाटर। इनसाइक्लोपीडिया ईरानिका। रूटलेज एंड के. पॉल।

(4) चेल्कोव्स्की, पी.जे. 1988. "विविध धार्मिक प्रथाएँ।" एस.एच. नस्र, एच. दबाशी, और एस.वी. रज़ा नस्र (संपादक), *शियावाद: सिद्धांत, विचार और आध्यात्मिकता*, 262–267 में। अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस।

(5) टर्नर, विक्टर। 1969. द रिचुअल प्रोसेस: स्ट्रक्चर एंड एंटी-स्ट्रक्चर। शिकागो: एल्डाइन।

(6) खान, सरफराज और हफीज-उर-रहमान चौधरी। 2011. आशूरा अनुष्ठानों का स्मरणोत्सव: ग्रामीण झांग, पाकिस्तान में इमामबारगाह हुसैनिया का एक केस स्टडी। मानवता और विज्ञान जर्नल, 6(1): 41-48.

(7) पिनॉल्ट, डेविड. 1997. दक्षिण एशिया में शिया मत. मुस्लिम वर्ल्ड, LXXXVII (3,4): 235-257.

(8) नकाश, यित्ज़ाक। 1993. आशूरा की रस्मों की शुरुआत का पता लगाने की एक कोशिश। डाई वेल्ट डेस इस्लाम, 33(2): 161-181.

(9) डी'सूज़ा डायने. 1998. इन द प्रेज़ेंस ऑफ़ द मार्टर्स: द आलम इन पॉपुलर शिया पायटी. मुस्लिम वर्ल्ड, LXXXVIII(I): 67-80.

---

(10) तारिख़ याकूबी, खंड। 2, पृ. 241; अल-फ़ुतुह, वॉल्यूम। 5, पृष्ट. 10-11.

(11) तारीख़ तबरी, खंड। 4, पृ. 258; इब्न अथिर, अल-कामिल फाई अल-तारिख, वॉल्यूम। 3, पृ. 268; अल-बिदयाह वा अल-निहायाह, खंड। 8, पृष्ट. 164.

(12) इब्न अथम, अल-फ़ुतुह, खंड। 3, खंड [बब] 5, पृष्ट. 18.

(13) अल-मुंतज़म, वॉल्यूम। 5, पृ. 323; अल-फ़ुतुह, वॉल्यूम। 5, पृष्ट. 15-18.

(14) उक्त., खंड. 4, पृष्ट. 251; इब्न अथिर, अल-कामिल फाई अल-तारिख, वॉल्यूम। 3, पृष्ट. 264; अल-बिदयाह वा अल-निहायाह, खंड। 8, पृ. 157-158; अल-अख़बार अल-तवल, पी. 228.

(15) मुख्तसर तारिख दमिश्क, खंड। 14, पृष्ट. 208.

(16) तारीख़ तबरी, खंड। 4, पृष्ट. 285.

(17) तारिख तबरी, खंड। 4, पृ. 289; इब्न अथिर, अल कामिल फाई अल तारिख, वॉल्यूम। 3, पृष्ट . 276.

(18) इब्न अथम, अल-फ़ुतुह, खंड। 5, पृष्ट. 150; ख़्वारज़मी, मंक़तल अल इमाम अल हुसैन (अ.स.), खोंड। 1, पृष्ट. 140.
(19) इब्न अथिर, अल कामिल फाई अल-तारिख, वॉल्यूम। 3, पृष्ट. 298.
(20) तारिख अल-खुलाफा', पृष्ठ 208.

वेबसाइट-
(21)https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A4%E0%A5%88%E0%A4%AE%E0%A5%82%E0%A4%B0%E0%A4%B2%E0%A4%82%E0%A4%97

(22) https://sanatangyanpeeth.in/history-of-muharram-tazia-in-india/
---
(23) https://youtu.be/BmFQZeR_L0I?si=AOevjq3LTWzCmfIb.
(24) G.R. Hawting, The first dynasty of islam the Umayyad caliphate AD 661-750 second edition.
(25) लेस्ली हज़ल्टन, After the Prophet: The Epic Story of the Shia-Sunni Split.
---
(26) Waheed Iqbad Chaudhry, Dr Ikram Badshah- Ethnographic Study of Muharram Rituals in a Punjabi Village in Pakistan. Journal of Asian Civilizations.
(27) Raza Masoudi Nejad- Practising Fractal Shi'i Identities through Muharram Rituals in Mumbai- Diversities Vol. 14, No. 2, 2012 • ISSN 2079-6595.
(28) Sanobar Haider, Muharram- A Retrospct- DOI: 10.13140/RG.2.2.18783.51364
